E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

11 YEARS ANNIVERSARY

वर्ष -11 अंक -285 | प्रयागराज, शुक्रवार 20 फरवरी, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ईरान पर कभी भी हमला कर सकता है अमेरिका! वेनेजुएला से भी खतरनाक कार्रवाई होगी

वॉशिंगटन। अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बहुत तेजी से बढ़ गया है और अब हालात ऐसे बन गए हैं कि आने वाले दिनों या हफ्तों में बड़ा सैन्य टकराव हो सकता है। एक अमेरिकी न्यूज एजेंसी Axios की रिपोर्ट के हिसाब से अगर अमेरिका सैन्य कार्रवाई करता है तो वह छोटी या प्रतीकात्मक कार्रवाई नहीं होगी, बल्कि कई हफ्तों तक चलने वाला बड़ा ऑपरेशन होगा। एक व्हाइट हाउस अधिकारी के हवाले से कहा गया है कि आने वाले हफ्तों में हमले की संभावना 90फीसदी तक है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह ऑपरेशन पिछले महीने वेनेजुएला में हुई सीमित कार्रवाई से कहीं बड़ा होगा और संभव है कि इसे इजराइल के साथ मिलकर अंजाम दिया जाए। इसका निशाना ईरान का परमाणु और मिसाइल ढांचा हो सकता है।इजराइल की सैन्य खुफिया एजेंसी के पूर्व प्रमुख आमोस

यादलिन ने कहा कि टकराव अब पहले से कहीं ज्यादा करीब है। हालात तेजी से बिगड़ रहे हैं, लेकिन एक महाशक्ति कुछ ही दिनों में युद्ध शुरू नहीं करती। कूटनीतिक रास्ता अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। यादलिन ने यह भी कहा कि कई लोग हमले के खिलाफ हैं और पेंटागन भी पूरी तरह साफ नहीं है कि वह इस कार्रवाई से क्या हासिल करना चाहता है, लेकिन राष्ट्रपति काफी दृढ़ नजर आ रहे हैं। ट्रम्प का 'सभी ऑप्शन खुले हैं' वाला बयान असली सैन्य तैयारी के बारे में बताता है।दूसरी तरफ अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने परमाणु कूटनीति के साथ-साथ बड़े स्तर पर सैन्य तैयारी भी शुरू कर दी है। मंगलवार को उनके सलाहकार जेराड कुशनर और स्टीव विटकॉफ ने जिनेवा में ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची से तीन घंटे तक बातचीत की।दोनों पक्षों ने कहा कि बातचीत में कुछ डेवलपमेंट हुआ है, लेकिन अमेरिकी अधिकारी अब भी कुछ बड़े मुद्दों पर सहमति बनने को लेकर डाउट में हैं।अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि कुछ मामलों में बातचीत अच्छी रही, लेकिन कई मुद्दों पर राष्ट्रपति ने जो 'रेड लाइन' तय की हैं, उन्हें ईरान मानने को तैयार नहीं है।

एपस्टीन फाइल्स

अमेरिकी होटल चेन हयात के चेयरमैन 2008 से यौन अपराधी के संपर्क में थे,दिया इस्तीफा

न्यूयॉर्क। अमेरिका के यौन अपराधी जेफ्री एपस्टीन के साथ संबंधों का

खुलासा होने के बाद दुनियाभर में इस्तीफों का दौर जारी है। ताजा इस्तीफा अमेरिकी होटल चेन हयात होटल्स के कार्यकारी अध्यक्ष अरबपति थॉमस प्रित्जकर का है। वे इस पद पर 1999 से थे। अमेरिकी न्याय विभाग की फाइल से पता चला है कि 2008 से एपस्टीन और प्रित्जकर लगातार संपर्क में थे। 2018 में एपस्टीन ने प्रित्जकर से अपनी प्रेमिका की दक्षिण-पूर्व एशिया यात्रा की व्यवस्था में मदद का अनुरोध किया था। 2015 का एक अन्य ईमेल बताता है कि एपस्टीन ने दुबई में निवेश बढ़ाने के लिए डीपी वर्ल्ड के सीईओ बिन सुलेयम और प्रित्जकर को जोड़ने की कोशिश की थी। उसने सुलेयम और जेस स्टेली के बीच कारोबारी संबंध बढ़ाने की भी कोशिश की, जो उस समय जेपी मॉर्गन चेस एंड कंपनी में वरिष्ठ कार्यकारी थे। थॉमस जे. प्रित्जकर, परिवार के 13 अरबपति होटल उत्तराधिकारियों में दूसरे सबसे धनी हैं। संपत्ति 6.2 अरब डॉलर है। 1999 से हयात के अध्यक्ष और 1999 से 2006 तक सीईओ रहे। एपस्टीन विवाद में अब तक जिन्होंने छोड़े पद उनमे प्रमुख हैं- वर्ल्ड की टॉप लॉजिस्टिक्स कंपनियों में से एक डीपी वर्ल्ड के सीईओ बिन सुलेयम, गोल्डमैन सैक्स की शीर्ष वकील कैथी रुएमलर,अमेरिकी लॉ फर्म पॉल वीस के चेयरमैन ब्रैड कार्प, हार्वर्ड विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष लैरी समर्स, नॉर्वे के पूर्व प्रधानमंत्री थोरब्योर्न जगलैंड, नॉर्वे की राजनयिक मोना जुउल और उनके पति पूर्व राजनयिक टेर्जे रोड-लार्सन, अमेरिका में ब्रिटेन के पूर्व राजदूत पीटर मेंडेलसन, ब्रिटेन के किंग चार्ल्स तृतीय के छोटे भाई प्रिंस एंड्रयू, फुटबॉल टीम न्यूयॉर्क जायंट्स के सह-मालिक स्टीव टिस्क, यूएनएचसीआर की स्वीडन की अध्यक्ष जोआना रुबिनस्टीन।

यौन अपराधों की सुनवाई कैसे, बनाई जाए गाइडलाइंस-सुप्रीम कोर्ट

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सेक्सुअल ऑफेंस मामलों की

सुनवाई को ज्यादा संवेदनशील और पीड़ित-केंद्रित बनाने के लिए राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी को व्यापक ड्राफ्ट गाइडलाइन तैयार करने का निर्देश दिया है। अदालत ने कहा कि ये दिशानिर्देश भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों और मूल्यों को ध्यान में रखकर तैयार किए जाएं और विदेशी कानूनी शब्दावली या मॉडल की नकल न की जाए। सीजेआई सूर्यकांत की अगुवाई वाली बेंच 2025 में स्वतः संज्ञान लिए गए एक मामले की सुनवाई कर रही थी।

यह मामला इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस आदेश से जुड़ा था, जिसमें एक नाबालिग लड़की के वेक स्तन पकड़ना, उसकी पायजामा की डोरी तोड़ना और उसे पुलिया के नीचे घसीटने के प्रयास को बलात्कार या बलात्कार के प्रयास की श्रेणी में नहीं माना गया था। कोर्ट ने उस फैसले को पहले ही 'त्रुटिपूर्ण' बताते हुए निरस्त कर दिया था।

अदालत ने कहा, कई बार अदालतों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा या टिप्पणियां पीड़ितों को और आहत कर सकती हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने 8 दिसंबर 2025 को दिए आदेश में कहा था कि यौन उत्पीड़न मामलों में असंवेदनशील न्यायिक टिप्पणिया पीड़ितों, उनके परिवार वालों और पूरे समाज पर 'चिलिंग इफेक्ट' (भयभीत करने वाला प्रभाव) डाल सकती है। अदालत कह चुकी है कि हम कुछ व्यापक निर्देश जारी करना चाहेंगे। अब इस मामले में सुप्रीम निर्देश जारी हुए हैं तो आने वाले दिनों में इसका व्यापक असर देखने को मिलेगा।

बेमान मौसम

मध्य प्रदेश में बारिश,राजस्थान में ओले गिरे,हरियाणा में बारिश से 7 डिग्री तापमान गिरा उत्तराखंड में बर्फबारी

प्रयागराज। प्रयागराज समेत देश के कई राज्यों में मौसम का

मिजाज बदल गया है। मध्य प्रदेश के भोपाल, ग्वालियर में गुरुवार सुबह बारिश हुई। मौसम विभाग ने 8 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। इससे पहले बुधवार को रतलाम, श्योपुर, मुरैना, शिवपुरी, मंदसौर समेत 20 जिलों में ओले गिरे थे।राजस्थान के 11 जिलों में तेज आंधी-बारिश को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी है। एक दिन पहले 11 से ज्यादा जिलों में दिनभर रुक-रुककर बारिश हुई। राजधानी जयपुर के एसएमएस अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर में पानी भर गया। इससे कई ऑपरेशन टल गए। 4 जिलों में ओले भी गिरे। हरियाणा के हिसार समेत कई इलाकों में 40-60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने और ओले गिरने की चेतावनी दी गई है। राज्य के भिवानी और रेवाड़ी में बुधवार दोपहर को हल्की बूंदाबांदी के साथ ओले गिरे। वहीं उत्तराखंड के देहरादून सहित पांच पहाड़ी जिलों में बारिश और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बर्फबारी की संभावना है।

आईआईटी कानपुर की रिसर्च ने बताया बड़ा भूकंप आया तो यूपी के प्रयागराज और कानपुर में होगा सबसे ज्यादा नुकसान

कानपूर। साल 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के झटके उत्तर प्रदेश तक महसूस किए गए

थे। लोग दहशत में घरों से बाहर निकल आए थे, लेकिन उस घटना के बाद भी भूकंप जैसी आपदा को लेकर गंभीर तैयारी नहीं हो सकी। अब आईआईटी कानपुर की एक विस्तृत रिसर्च ने चिंता बढ़ा दी है। संस्थान के वैज्ञानिकों के अनुसार, गंगा के मैदानी क्षेत्रों खासकर कानपुर और प्रयागराज में यदि 6.5 या उससे अधिक तीव्रता का भूकंप आता है, तो बड़े पैमाने पर नुकसान हो सकता है। सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर निहार रंजन पात्रा के मुताबिक इन दोनों शहरों की जमीन में मौजूद मिट्टी में बालू की मात्रा अधिक है और उसके कण बेहद महीन हैं। रिसर्च में बताया गया है कि भूकंप के तेज झटकों से मिट्टी की मजबूती खत्म हो जाती है। जब जमीन के नीचे मौजूद पानी और सिल्ट वाली बालू आपस में मिलकर ऊपर की ओर आने लगते हैं, तो इस प्रक्रिया को लिक्विफेक्शन कहा जाता है। ऐसी स्थिति में इमारतों की नींव कमजोर पड़ जाती है और पक्के ढांचे धंस सकते हैं या गिर सकते हैं। प्रोफेसर पात्रा ने बताया कि साल 1803 और 1934 में गंगा के मैदानी क्षेत्रों में आए बड़े भूकंपों के बाद भी लिक्विफेक्शन की घटनाएं दर्ज की गई थीं। यह क्षेत्र भूकंपीय फॉल्ट के प्रभाव क्षेत्र में भी आता है, जिससे जोखिम और बढ़ जाता है। आमतौर पर भूकंप के दौरान 8 से 10 मीटर की गहराई तक लिक्विफेक्शन का प्रभाव देखा जाता है, लेकिन कानपुर और प्रयागराज में यह असर 30 से 40 मीटर गहराई तक हो सकता है। रिसर्च के दौरान दोनों शहरों में 20-20 स्थानों से मिट्टी के नमूने लिए गए। कानपुर में गंगा बैराज के पास 70-80 मीटर गहराई तक बोरहोल से सैंपल इकट्ठे किए गए।

बिल गेट्स नहीं देंगे एआई समिट में भाषण, अब गेट्स फाउंडेशन के अंकुर वोरा स्पीच देंगे, आज समिट का आखरी दिन

नयी दिल्ली। माइक्रोसॉफ्ट के को-फाउंडर बिल गेट्स नई दिल्ली

में चल रही एआई समिट में अपना मुख्य भाषण नहीं देंगे। गेट्स फाउंडेशन ने इसकी जानकारी दी। फाउंडेशन ने कहा कि यह फैसला काफी सोच-विचार के बाद लिया गया है ताकि समिट का पूरा ध्यान अपनी प्राथमिकताओं पर बना रहे। फाउंडेशन ने बताया कि समिट में बिल गेट्स की जगह अब अंकुर वोरा फाउंडेशन का पक्ष रखेंगे। अंकुर वोरा फाउंडेशन के अफ्रीका और भारत कार्यालयों के प्रेसिडेंट हैं। वे आज समिट के एक सत्र में अपनी बात रखेंगे। अंकुर वोरा फाउंडेशन के कामों को लंबे समय से देख रहे हैं।बिल गेट्स के समिट से हटने से वजह अमेरिकी अपराधी जेफ्री एपस्टीन से जुड़े दस्तावेजों में आए उनके नाम को बताया जा रहा है। इन गुप्त दस्तावेजों को हाल ही में जारी किया गया है। एपस्टीन पर यौन अपराधों और नाबालिगों की तस्करी के गंभीर आरोप थे। 2019 में आत्महत्या के बाद, उससे जुड़े कई क्लासीफाइड दस्तावेज सार्वजनिक किए गए हैं। इन फाइलों में दावा किया गया है कि एपस्टीन और गेट्स के बीच गहरे संबंध थे। एपस्टीन ने गेट्स के एक्स्ट्रा-मैरिटल अफेयर्स और अन्य निजी गतिविधियों में मदद की थी। बिल गेट्स ने एक इंटरव्यू में इन मुलाकातों पर अफसोस जताया है। उन्होंने कहा कि मैंने एपस्टीन के साथ जो भी समय बिताया, मुझे उसका पछतावा है और मैं इसके लिए माफी मांगता हूं। इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट में गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई और ओपन-एआई के सैम ऑल्टमैन जैसे दिग्गज शामिल हो रहे हैं। इसमें एनवीडिया के सीईओ जेंसेन हुआंग भी शामिल होने वाले थे, लेकिन उन्होंने कार्यक्रम रद्द कर दिया है। कयास थे कि उनके हटने की वजह बिल गेट्स की मौजूदगी हो सकती है। हालांकि कंपनी ने कोई आधिकारिक कारण नहीं दिया है।

होटल में दूसरा कमरा नहीं था तो महिला मरीज को रिटायर्ड डॉक्टर ने अपने कमरे में रोका और किया रेप

भोपाल। ग्वालियर के 65 वर्षीय रिटायर्ड डॉक्टर पर 30 वर्षीय महिला ने संगीन आरोप लगाया है। महिला का आरोप है कि डॉक्टर ने इलाज के नाम पर भोपाल ले आए। इसके बाद एमपी नगर के जोन-2 स्थित होटल में रेप किया है। महिला स्किन की बीमारी से पीड़ित है। बीमारी बढ़ने पर डॉक्टर ने कहा था कि इलाज के लिए भोपाल चलना पड़ेगा, वही पर इसके स्पेलिस्ट हैं। महिला का आरोप है कि इलाज के नाम पर लाकर रिटायर्ड डॉक्टर एमपी नगर स्थित एक होटल में ले गया। यहां उसकी दवाइयों में नींद की गोली मिला दी। इस दौरान वह चाहकर भी विरोध नहीं कर सकी। रिटायर्ड डॉक्टर ने इसी का फायदा उठाया और रेप किया। महिला की शिकायत पर एमपी नगर पुलिस ने आरोपी डॉक्टर के खिलाफ रेप का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। दरअसल, पीड़ित 30 वर्षीय महिला हाउस वाइफ है। आरोपी डॉक्टर का नाम अमरीश सेंगर है। महिला चर्मरोग से पीड़ित थी। वह डॉक्टर के पास इलाज कराने गई थी। अमरीश पहले सरकारी अस्पताल में कार्यरत रहे हैं। रिटायर्ड होने के बाद वह क्लिनिक चलाते हैं। महिला की बीमारी में कोई सुधार नहीं हो रहा था और स्किन की बीमारी और फैलने लगी।इसके बाद रिटायर्ड डॉक्टर ने महिला से कहा कि उसे भोपाल में स्पेशलिस्ट डॉक्टर से सलाह लेने होगी। उसने दावा किया कि वहां कुछ टेस्ट होंगे जो ग्वालियर में नहीं हो सकते हैं।आरोपी डॉक्टर 14 फरवरी को महिला को लेकर भोपाल आया। इस दौरान एमपी नगर स्थित होटल में लाया। महिला ने डॉक्टर से कहा कि मुझे अलग कमरा चाहिए। इस पर डॉक्टर ने कहा कि इस होटल में कोई दूसरा कमरा खाली नहीं है। 14 फरवरी की रात ही आरोपी ने होटल में उसके साथ रेप किया है। पुलिस महिला की शिकायत पर जांच शुरू कर दी है। वहीं, डॉक्टर की तलाश की जा रही है।

बांग्लादेश में हिंदू पुलिसकर्मी की हत्या करने वाला दिल्ली एयरपोर्ट पर गिरफ्तार

नयी दिल्ली। बांग्लादेश में हिंदू पुलिसकर्मी की हत्या करके वाले शख्स को दिल्ली में एयरपोर्ट पर हिरासत में लिया गया है। बताया जा रहा है कि आरोपी दिल्ली के रास्ते यूरोप भागने की कोशिश कर रहा था। आरोपी की पहचान अहमद रजा हसन मेहदी के तौर पर हुई है। मेहदी को इमिग्रेशन डिपार्टमेंट ने एयरपोर्ट पर रोका था। दरअसल, अहमद रजा हसन मेहदी ने 2024 में संतोष शर्मा नाम के एक हिंदू पुलिस ऑफिसर की हत्या की जिम्मेदारी ली थी।

बांग्लादेश के एक पुलिस स्टेशन में बैठकर यह बयान देते हुए उसका एक वीडियो ऑनलाइन वायरल हुआ था। इंडिया टुडे की

रिपोर्ट के मुताबिक अधिकारियों ने मेहदी के दिल्ली आने के इनपुट पर एक्शन लिया और यूरोप के लिए फ्लाइट पकड़ने से पहले ही उसे रोक लिया। इसके बाद जरूरी प्रोसेस पूरी कर उसे बांग्लादेश डिपोर्ट कर दिया गया।

बता दें कि 5 अगस्त 2024 को बनियाचांग पुलिस स्टेशन में एक संतोष शर्मा की हत्या कर दी गई और बाद में उनकी बॉडी को पेड़ से लटका दिया गया। ये पूरा घटनाक्रम शेख हसीना की सरकार के हटने के बाद देश में फैली अशांति के दौरान हुआ था।

स्टूडेंट्स के विरोध प्रदर्शन के साथ शुरू हुआ ये आंदोलन जल्द ही माइनॉरिटी के खिलाफ हिंसा में बदल गया था। इस दौरान हिंदुओं पर हमले हुए और उनके पूजा स्थलों में तोड़फोड़ की गई थी।

मोहन भागवत ने बताई संघ की 'अधूरी' सफलता की वजह

लखनऊ। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ इसके शताब्दी वर्ष पर देश-विदेश में अपने विचारों को विस्तार देने के अभियान में जुटा हुआ है। इसकी कमान खुद आरएसएस चीफ या सर संघचालक मोहन भागवत ने संभाल रखी है। बुधवार को उन्होंने लखनऊ में इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में समाज के लोगों से तकरीबन ढाई घंटे तक बातचीत की। इस कार्यक्रम में उन्होंने संघ के विचारों के बारे में भी बताया और लोगों के सवालों के सहजता से उत्तर भी दिए। मोटे तौर पर सात ऐसे सम-सामयिक और राजनीति मुद्दे हैं, जिन पर भागवत ने आरएसएस की सोच को लोगों के सामने रखा। आरएसएस प्रमुख ने लोगों से अनुरोध किया है कि बिना संघ में शामिल हुए,इसे जज करने की कोशिश न करें। उन्होंने राष्ट्रहित में हिंदुओं को एकजुट होने की अपील की। मोहन भागवत ने कहा कि पिछले 100 वर्षों में आरएसएस ने कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं, लेकिन यह भी माना है कि इसका मिशन अभी भी अधूरा है। उन्होंने कहा, 'संघ ने बहुत काम किया है, लेकिन इसे पूर्ण सफलता नहीं मिली है, क्योंकि हिंदू समाज एकजुट नहीं है।'

प्रयागराज जोन के अंतरजनपदीय पुलिस प्रतियोगिता शुरू

प्रयागराज। प्रतापगढ़ पुलिस लाइन में प्रयागराज जोन की तृतीय अंतरजनपदीय महिला-पुरुष पुलिसकर्मियों की भारोत्तोलन और योगा प्रतियोगिता का शुभारंभ हो गया है। पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस प्रतियोगिता में प्रतापगढ़, कौशाम्बी, फतेहपुर, प्रयागराज, बांदा, चित्रकूट और महोबा जिलों की टीमों ने भाग लिया।

भारोत्तोलन प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में विभिन्न भार वर्गों के परिणाम घोषित किए गए। 61 किलोग्राम भार वर्ग में प्रयागराज के आरक्षी रोहित यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि बांदा के मोहित कुमार द्वितीय रहे। 67 किलोग्राम वर्ग में प्रतापगढ़

के रविन्द्र बघेल प्रथम और फतेहपुर के सूरज कुमार द्वितीय स्थान पर रहे। 73 किलोग्राम भार वर्ग में प्रयागराज के मृत्युंजय राय ने पहला स्थान हासिल किया, वहीं प्रतापगढ़ के सौरभ यादव दूसरे स्थान पर रहे। 81 किलोग्राम वर्ग में प्रतापगढ़ के शिवा तिवारी प्रथम और फतेहपुर के शिवजीत कुमार द्वितीय रहे।

89 किलोग्राम वर्ग में प्रतापगढ़ के सूरज मौर्य ने जीत दर्ज की, जबकि प्रयागराज के अमित गौतम दूसरे स्थान पर रहे।

महिला भारोत्तोलन वर्ग में 47 किलोग्राम में प्रतापगढ़ की अपूर्वा वर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 49 किलोग्राम में वंदना और 55 किलोग्राम में स्वाति वर्मा ने पहला स्थान हासिल किया, हालांकि इनके जिले स्पष्ट नहीं हैं। 55 किलोग्राम वर्ग में बांदा की निधि निरंजन द्वितीय स्थान पर रहीं।

अतीक अहमद गैंग की बेशकीमती जमीन पर ईडी जीएसटी भवन और महिला हॉस्टल बनेगा

प्रयागराज। अतीक अहमद और अशरफ की मौत को दो

साल से अधिक का समय बीत चुका है.लेकिन गैंग के खिलाफ कार्रवाई अभी थमी नहीं है. जिला प्रशासन ने अतीक के गुर्गों के कब्जे से 100 करोड़ रुपये से अधिक की बेशकीमती जमीन को कब्जा मुक्त करवाया है. खास बात यह है कि जिस जमीन पर कभी माफिया का खौफ था अब वहां देश की बड़ी जांच एजेंसियों के दफ्तर और गर्ल्स हॉस्टल नजर आएंगे. 38 बीघा जमीन में से 9 बीघा जमीन का आवंटन 4 प्रमुख सरकारी विभागों को कर दिया गया है. एयरपोर्ट चौराहे के पास स्थित इस जमीन की बाजार में कीमत करीब 25 करोड़ रुपये आंकी गई है.

प्रशासन की योजना के मुताबिक इस जमीन का उपयोग जनहित और सरकारी कामकाज के लिए किया जाएगा. जमीन के इस हिस्से पर अब प्रवर्तन निदेशालय का क्षेत्रीय कार्यालय बनेगा. विभाग का भवन तैयार होगा और छात्राओं के लिए गर्ल्स हॉस्टल का निर्माण किया जाएगा. प्रशासन ने इसके लिए प्रस्ताव तैयार कर लिया है. साथ ही नसीरपुर सिलना गांव की बची हुई जमीन पर पांच अन्य सरकारी विभागों को भी जगह देने की तैयारी चल रही है.

'अविमुक्तेश्वरानंद डिप्टी सीएम-सतुआ बाबा के संपर्क में थे'-आशुतोष महाराज बोले

प्रयागराज। माघ मेले में मौनी

अमावस्या पर हुए विवाद के बाद स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती और श्रीकृष्ण जन्मभूमि के मुख्य वादी आशुतोष महाराज के बीच सीधा टकराव शुरू हो गया है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने घटना पर बयान देते हुए कहा कि 'चोटी पकड़कर पीटना महापाप है, पाप लगेगा।' इस पर आशुतोष महाराज ने तीखी प्रतिक्रिया दी। आशुतोष महाराज ने वीडियो जारी कर उपमुख्यमंत्री पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने बिना नाम लिए सीएम के करीबी 'सतुआ बाबा' पर भी निशाना साधा। आशुतोष महाराज ने कहा- माघ मेला में अविमुक्तेश्वरानंद द्वारा किया गया ड्रामा बड़ी साजिश का हिस्सा था, जिसमें बड़े-बड़े लोगों का हाथ है। उपमुख्यमंत्री और बनारस स्थित एक चर्चित बाबा के अविमुक्तेश्वरानंद, उनके गुरु भाई सदानंद सरस्वती, सीआईओ प्रकाश उपाध्याय के नंबर की जांच कराई जाए।

शहर में कुछ मस्जिदों में नहीं हुई तरावीह,मौलानाओं में फंसा था चांद देखने का मसला

प्रयागराज। दरअसल रमजान का चांद नजर आने को लेकर आधी

रात तक मौलाना चांद नजर आने, न आने की गवाही में मशगूल रहे। ऐसे में कुछ मस्जिदों में तरावीह नहीं हो सकी। हालांकि आधी रात वहां से भी ऐलान हो गया कि गुरुवार को पहला रोजा रखें। अब जिन मस्जिदों में तरावीह बुधवार को नहीं हो सकी वह गुरुवार से तरावीह शुरू करेंगे। रमजान का पहला रोजा गुरुवार को रखा गया। मुस्लिम इलाकों में रोजेदार इबादत में जुटे हैं। पांच वक्त की नमाज और तरावीह के लिए मस्जिदों में खास इंतजाम हुए हैं। वहीं घरों में भी पूरे दिन महिलाएं रोजा रख कुरआन पाक की तिलावत कर रही हैं। इफ्तारी के सामानों का बाजार भी मुस्लिम इलाकों में सज गया है। चौक, घंटाघर, नखासकोहना, अटाला, नुरुल्ला रोड, करेली आदि में सहरी और इफ्तार के सामान की सैकड़ों दुकानें खुल गई हैं। इफ्तार से पहले शाम को यहां की रौनक अलग ही नजर आएगी। प्रयागराज में रमजान के चांद नजर आने को लेकर देर रात तक पेंच फंसा रहा। ऐसे में कुछ मस्जिदों में तरावीह नहीं पढ़ी गई। कई जगह तो तरावीह पढ़ाई जाने शुरू होने के बाद कैंसिल की गई। असल में शहर काजी जामा मस्जिद से चांद की तस्दीक नहीं हुई थी। ऐसे में उस मसलक के मानने वालों ने तरावीह नहीं शुरू की। जबकि सुन्नी मरकजी रुहते हिलाल कमेटी कदीम ने चांद दिखने की तस्दीक करते हुए ऐलान कर दिया। मुफ्ती मोहम्मद मुजाहिद हुसैन रजवी ने ऐलान किया कि चांद नजर आ गया है।

आक्रोशितःदुर्गागंज के रास्ते प्रयागराज जाते हैं पशु तस्कर,ग्रामीणों में चर्चा

प्रयागराज। भदोही जनपद के सुरियावां थाना क्षेत्र में रेलवे फाटक के पास पशु तस्करी को लेकर ग्रामीणों में चर्चा हैं की पशुओं से लदे वाहन सुरियावां रेलवे फाटक से होकर दुर्गागंज थाना क्षेत्र के रास्ते प्रयागराज की ओर जाते हैं। जिसको लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि पशुओं से लदे वाहन सुरियावां रेलवे फाटक से होकर दुर्गागंज थाना क्षेत्र के रास्ते प्रयागराज की ओर जाते हैं। ग्रामीणों के अनुसार, इन वाहनों में बेजुबान जानवरों को अमानवीय तरीके से ठूंसकर ले जाया जाता है, जिससे उनकी हालत बेहद खराब हो जाती है। देर रात तेज रफ्तार से गुजरने वाले इन वाहनों को लेकर क्षेत्र में लगातार गुस्सा बढ़ रहा है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि पूर्व में भी इस मामले को सोशल मीडिया और समाचार माध्यमों से उठाया गया था, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई

नहीं हुई है। सामाजिक संगठनों ने जिला प्रशासन और पुलिस अधीक्षक से मामले की निष्पक्ष जांच कर सख्त कार्रवाई की मांग की है। लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि समय रहते इस अवैध धंधे पर रोक नहीं लगाई गई, तो यह और बढ़ सकता है। फिलहाल, क्षेत्र में इस विषय पर चर्चाएं जारी हैं और सभी की निगाहें प्रशासनिक कदमों पर टिकी हैं। ग्रामीणों के अनुसार, इन वाहनों में बेजुबान जानवरों को अमानवीय तरीके से ठूंसकर ले जाया जाता है, जिससे उनकी हालत बेहद खराब हो जाती है। देर रात तेज रफ्तार से गुजरने वाले इन वाहनों को लेकर क्षेत्र में लगातार गुस्सा बढ़ रहा है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि पूर्व में भी इस मामले को सोशल मीडिया और समाचार माध्यमों से उठाया गया था, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। सामाजिक संगठनों ने जिला प्रशासन और पुलिस अधीक्षक से मामले की निष्पक्ष जांच कर सख्त कार्रवाई की मांग की है। लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि समय रहते इस अवैध धंधे पर रोक नहीं लगाई गई, तो यह और बढ़ सकता है। फिलहाल, क्षेत्र में इस विषय पर चर्चाएं जारी हैं और सभी की निगाहें प्रशासनिक कदमों पर टिकी हैं।

नए यमुना पुल से युवक ने लगाई छलांग,गोताखोरों ने बचाई जान,सुरक्षित परिजनों को सौंपा

प्रयागराज। शहर में बने नए यमुना पुल से बुधवार को एक युवक ने नदी में छलांग लगा दी

थी। जिसको मौके पर तैनात पीएसी जवानों ने तत्परता दिखाते हुए उसे सुरक्षित बाहर निकाल लिया। युवक को प्राथमिक उपचार के बाद परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, अर्पित अचानक नए यमुना पुल पर पहुंचा और रेलिंग पार कर नदी में कूद गया। उस समय कीडगंज थाना क्षेत्र के बोट क्लब काली घाट पर बाढ़ ड्यूटी के लिए 34वीं वाहिनी पीएसी वाराणसी की 'बी' टीम तैनात थी। कमांडर ब्रजेश कुमार के नेतृत्व में ड्यूटी कर रही टीम ने युवक को नदी में गिरते देखा और तत्काल रेस्क्यू अभियान शुरू किया।आरक्षी संजीत मौर्या और आरक्षी राजेंद्र कुमार पाल ने त्वरित कार्रवाई करते हुए नदी में उतरकर युवक को डूबने से बचाया और सुरक्षित बाहर निकाल लिया। सूचना मिलते ही युवक के पिता महेश चंद्र केशवानी, माता आशा देवी और भाई राहुल मौके पर पहुंच गए। प्राथमिक उपचार के बाद अर्पित को उसके भाई राहुल के सुपुर्द कर दिया गया। इस साहसिक और सराहनीय कार्य के लिए 34वीं वाहिनी पीएसी की सेनानायक डॉ. मीनाक्षी कात्यायन (आईपीएस) ने जवानों की प्रशंसा की और उन्हें पुरस्कृत किया।

30 मिनट में दूरबीन से बंद हुआ 14 मिमी का एएसडी छेद-डॉ. ऋषिका पटेल

एसआरएन डिवाइस क्लोजर तकनीक से सफल ऑपरेशन

प्रयागराज। एसआरएन अस्पताल ने पीडियाट्रिक

कार्डियोलॉजी में 7 वर्षीय देवांश साहू के हृदय में 14 मिमी के जन्मजात एएसडी छेद को बिना ओपन हार्ट सर्जरी के डिवाइस क्लोजर तकनीक से सफलतापूर्वक बंद किया गया था।

यह मिनिमली इनवेसिव प्रक्रिया शहर में किसी बाल रोगी पर पहली बार की गई। सर्जरी करने वाली कार्डियोलॉजिस्ट डॉ ऋषिका पटेल दैनिक भास्कर से ऑपरेशन के बारे में बातचीत की। उन्होंने बताया कि बच्चे को तीन-चार साल से सांस फूलने की शिकायत थी। जो इतनी बढ़ गई थी कि वह सहज खेल-कूद न कर पाता था और स्कूल जाना भी मुश्किल हो गया। 2डी इको टेस्ट से पता लगाया कि बच्चे के दिल में 20 एमएम का एएसडी छेद है। साथ ही दाहिने हिस्से के चैंबर्स डाइलेटेड थे।एसआरएन अस्पताल में कैथेटर (दूरबीन) के जरिए एएसडी क्लोजर डिवाइस लगाकर छेद बंद किया जो ड्रम के आकार का होता है। पूरी प्रक्रिया इको से लेकर समापन तक महज आधा घंटा चली बच्चा पूरी तरह स्थिर रहा। दूसरे दिन ही डिस्चार्ज कर दिया गया। इको में छेद पूरी तरह बंद पाया गया। सात-आठ दिनों में सांस फूलने की दिक्कत धीरे-धीरे खत्म हो जाएगी। साथ ही फॉलो-अप से चैंबर्स नॉर्मल होंगे।डॉ. ऋषिका पटेल ने बताया ये कंजेनिटल हार्ट डिसीज है जो जन्मजात होती है। भ्रूण में दिल का छेद सामान्य है जो जन्म के बाद बंद हो जाता है, लेकिन कुछ बच्चों में स्थायी रहता है।

' 8 एमएम से बड़े छेद, डाइलेशन और लक्षणों (सांस फूलना, धड़कन) पर तुरंत बंद करना जरूरी है, वरना भविष्य में सर्जरी असंभव हो सकती है। जितनी जल्दी डायग्नोसिस और हस्तक्षेप, उतना बेहतर। एट्रियल सेप्टल डिफेक्ट एक सामान्य जन्मजात हृदय दोष है जिसमें हृदय के ऊपरी कक्षों को अलग करने वाली दीवार में एक छेद होता है। जिससे ऑक्सीजन युक्त और ऑक्सीजन रहित रक्त आपस में मिल जाते हैं। बच्चों में अक्सर इसके कोई लक्षण नहीं दिखते लेकिन बड़े दोषों के कारण थकान, सांस लेने में तकलीफ, विकास में रुकावट और बार-बार फेफड़ों में संक्रमण हो सकता है। हालांकि कई छोटे दोष अपने आप ठीक हो जाते हैं लेकिन गंभीर मामलों में फुफ्फुसीय उच्च रक्तचाप या हृदय विफलता जैसी दीर्घकालिक जटिलताओं को रोकने के लिए कैथेटर या शल्य चिकित्सा की आवश्यकता हो सकती है।

आधुनिक समाचार नेटवर्क। प्रयागराज। 29वी अंतर वाहिनी पीएसी पूर्वी जोन भारोत्तोलन 42 वीं वाहिनी पी.ए.सी. नैनी, प्रयागराज में हो रहा जिसमे वेट लिफ्टर व और भी सम्मानित लोगो ने शिरकत की जो की दिनांक 19.02.2026 से 21.02.2026 तक होगी.

गूगल-पे कस्टमर केयर बनकर ठग लिए 1.93 लाख,मोबाइल हैक कर उड़ाई रकम

प्रयागराज। शहर में टिकट रिफंड के नाम पर साइबर ठगों ने 1.93 लाख रुपए ठग लिए। गूगल पे कस्टमर केयर बनकर साइबर ठगों नेंइख फाइल डाउनलोड कराई। इसके बाद 5 लोगों के अकाउंट से रुपए निकाल लिए। पीड़ित ने पुलिस को बताया, उन्होंने 24 दिसंबर की रात करीब 9:14 बजे दिल्ली से प्रयागराज की ट्रेन बुक की थी, फिर कैंसिल कर दी थी। टिकट का रिफंड न मिलने पर इंटरनेट पर कस्टमर केयर नंबर मिला। इस पर संपर्क किया। कुछ ही देर बाद दूसरे नंबर से उनके व्हाट्सएप पर कॉल आया। कॉल करने वाले ने खुद को गूगल पे का प्रतिनिधि बताते हुए एकंइख फाइल डाउनलोड करने को कहा। फिर 1.93 लाख रुपए ठग लिए। पूरा मामला कर्नलगंज के पुराना कटरा का है। पुराना कटरा के रहने वाले सुनील कुमार ने कहा- जैसे ही मैंने बताए गए निर्देशों का पालन किया, जालसाजों ने उनके मोबाइल का रिमोट एक्सेस ले लिया। इसके बाद उनसे गूगल-पे और फोन-पे ऐप खोलने को कहा। आरोपी ने यह भी कहा कि ट्रांजेक्शन में समय लग रहा है और 24 घंटे में पैसा वापस हो जाएगा। पीड़ित के अनुसार, उनके मोबाइल नंबर से जुड़े परिवार के खातों से अलग-अलग ट्रांजेक्शन कर कुल 1.93 लाख रुपये निकाल लिए गए।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

खैराबाद नगर पालिका अध्यक्ष ने सीएम योगी से की मुलाकात मिला विकास कार्यों के प्रस्तावों को जल्द मंजूरी का आश्वासन

आधुनिक समाचार नेटवर्क। सीतापुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री

योगी आदित्यनाथ से खैराबाद नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती बेबी गुप्ता, व अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता ने कल शाम 5 कालीदास मार्ग लखनऊ स्थित आवास पर मुलाकात की।मुख्यमंत्री को खैराबाद नगर में चल रहे विकास कार्यों की जानकारी दी। इनमें अमृत सरोवर सौंदर्यीकरण,अटल पार्क, गौरी देवी मंदिर में वंदन योजना के तहत कार्य और शहर की सफाई व्यवस्था शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि विकास कार्यों और बड़ी परियोजनाओं के प्रस्तावों को शासन द्वारा प्राथमिकता से स्वीकृति दी जाएगी। मुलाकात के दौरान बेबी गुप्ता के साथ उनकी पुत्री अवंशिका भी मौजूद थी।मुख्यमंत्री ने अवंशिका से बात की बच्ची ने मुख्यमंत्री जी को गुलाब का फूल भी भेंट किया। अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता ने बताया खैराबाद में बस अड्डा निर्माण, खैराबाद प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का आधुनिकीकरण ,भुईंया ताली तीर्थ पर्यटन स्थल, खैराबाद नगर के चारो दिशाओं में चार देवियो के प्राचीन मंदिर बने है - शीतला देवी,भुईंया ताली,गौरी देवी,पूर्वी देवी मंदिरों के आवागमन हेतु सुगम रास्ता, प्रकाश व्यवस्था व सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट,अन्त्येष्टि स्थल, नगर में एक स्टेडियम के निर्माण की मांग रखी। मुख्यमंत्री ने सभी मांगों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने खैराबाद के विकास के लिए आश्वासन दिया।

मैहर की समस्याओं का समाधान, विकास की गति को तेज करना ही प्राथमिकता-श्रीकांत चतुर्वेदी

मैहर में पॉलिटेक्निक कॉलेज आरंभ होगा

आधुनिक समाचार नेटवर्क मैहर।मप्र विधानसभा सत्र के दौरान

क्षेत्र की महत्वपूर्ण योजनाओं को गति देने हेतु सदन के पटल पर अपनी बात रखी। नवगठित मैहर जिले में युवाओं को तकनीकी शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित करने का विषय विधानसभा में प्रमुखता से उठाया। इस पर तकनीकी शिक्षा मंत्री ने अनौपचारिक रूप से कहा कि मैहर में इंजीनियरिंग कॉलेज तो नहीं पॉलिटेक्निक कॉलेज खोलना व्यवहारिक होगा।मैहर क्षेत्र के आसपास के युवाओं को तकनीकी रूप से शिक्षित करने के लिए लंबे समय से मैहर में पॉलिटेक्निक या इंजीनियरिंग कॉलेज की मांग की जाती रही है।इस दिशा में मैहर विधायक श्री श्रीकांत चतुर्वेदी के विशेष प्रयासों से पॉलिटेक्निक कॉलेज खुलने की स्थिति बनी है। विधायक श्री श्रीकांत चतुर्वेदी ने बताया कि ?क्षेत्र की जनता को बेहतर बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना ही हमारा लक्ष्य है। विकास के सभी प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं। इस दिशा में युवा शक्ति को तकनीकी रूप से शिक्षित एवं दक्ष बनाने के लिए पॉलिटेक्निक कॉलेज को स्थापित करने की कार्यवाही भी आरंभ कर दी गई है। इसमें जमीन का चयन व अन्य कार्यवाही आरम्भ हो गई हैं। विधायक श्री चतुर्वेदी ने बताया कि मैहर के युवाओं को तकनीकी शिक्षा के लिए अन्य जिले सतना ,रीवा में जाना पड़ता है। पॉलिटेक्निक कॉलेज के आरम्भ होने से क्षेत्र की बालिकाएं विशेष रूप से तकनीकी शिक्षा से लाभान्वित होंगी । विधायक श्री चतुर्वेदी ने आगे कहा कि पॉलिटेक्निक कॉलेज की सहमति के लिए प्रदेश की भाजपा सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव जी एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार जी का आभार व्यक्त किया है। विधायक श्री श्रीकांत चतुर्वेदी ने बताया कि ?क्षेत्र की जनता को बेहतर बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना ही हमारा लक्ष्य है।

29वीं अंतर वाहिनी पीएसी पूर्वी जोन, भारोत्तोलन क्लस्टर(भारोत्तोलन, योग व पावर लिफ्टिंग) प्रतियोगिता का शुभारंभ समारोह

आधुनिक समाचार नेटवर्क प्रयागराज। दिनांक 19.02.2026 से 42वीं वाहिनी पीएसी नैनी

प्रयागराज के प्रांगण में आयोजित होने वाली 29वीं अंतर वाहिनी पीएसी पूर्वी जोन, भारोत्तोलन क्लस्टर(भारोत्तोलन, योग व पावर लिफ्टिंग) प्रतियोगिता वर्ष-

2026 का शुभारंभ मुख्य अतिथि महोदय सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (ह्इए) द्वारा वाहिनी परेड ग्राउंड में किया गया। इस प्रतियोगिता मे 42वीं वाहिनी, 04वी वाहिनी, 12वीं वाहिनी, 20वीं वाहिनी, 33वीं वाहिनी, 34वीं वाहिनी, 36वीं वाहिनी, 37वीं वाहिनी, 39वीं वाहिनी, 48वीं वाहिनी कुल 10 वाहिनी के प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया जा रहा है। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि महोदय के आगमन पर सभी टीम प्रबंधकों से परिचय प्राप्त किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि महोदय द्वारा फीता काटकर प्रतियोगिता का अत्यंत उत्साहपूर्ण एवं गरिमामयी शुभारंभ किया गया। सभी टीमों ने अनुशासन की मिसाल पेश करते हुए शानदार मार्च पास्ट किया। खेल भावना को सर्वोपरि रखते हुए प्रतियोगिता को शुचितापूर्ण, ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक सम्पन्न करने की शपथ ली गई।

महोदय द्वारा प्रतियोगिता के शुभारंभ की घोषणा की गयी। तत्पश्चात योग प्रतियोगिता प्रारंभ की गई। खिलाड़ियों द्वारा विभिन्न योग क्रियाओं का प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान शिविरपाल श्री अरविंद कुमार सिंह, सहायक शिविरपाल श्री हरदास, सूबेदार मेजर श्री राधेश्याम यादव, निर्णायक मंडल, मीडिया के सम्मानित अधिकारीगण, समस्त टीम प्रबन्धक एवं प्रतिभागी एवं वाहिनी के अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

काशी, अयोध्या और प्रयागराज सहित प्रदेश के सभी तीर्थ स्थलों में बढ़ती श्रद्धालु संख्या बेहतर व्यवस्थाओं का प्रमाण

श्रीराम मंदिर अयोध्या में सुगम दर्शन के लिए कोई शुल्क नहीं

आधुनिक समाचार नेटवर्क। लखनऊ। विधानपरिषद में प्रश्नों का उत्तर देते हुए उप मुख्यमंत्री व नेता सदन विधान परिषद श्री केशव प्रसाद मौर्य ने स्पष्ट किया कि वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर का संचालन मंदिर न्यास परिषद द्वारा किया जाता है और सुगम दर्शन शुल्क का निर्णय भी न्यास परिषद ही करता है, जबकि राम मंदिर अयोध्या में सुगम दर्शन के लिए कोई शुल्क निर्धारित नहीं है। उन्होंने बताया कि जनवरी 2025 से जनवरी 2026 के बीच काशी में सुगम दर्शन के लिए लगभग 10.7 लाख श्रद्धालुओं को दर्शन पर्ची जारी की गई। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में मंदिरों में सामान्यतः सुगम दर्शन शुल्क लागू करने का निर्णय संबंधित मंदिर प्रबंधन या ट्रस्ट द्वारा लिया जाता है, सरकार केवल सुरक्षा और व्यवस्थाओं की निगरानी करती है। उन्होंने बताया कि काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर बनने के बाद श्रद्धालुओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2017 में जहां लगभग 77 लाख श्रद्धालु दर्शन करने पहुंचे थे, वहीं वर्ष 2025 में यह संख्या बढ़कर 17 करोड़ से अधिक हो गई। उन्होंने यह भी बताया कि विदेशी श्रद्धालुओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2014 में जहां लगभग 28 हजार विदेशी श्रद्धालु आए थे, वहीं वर्ष 2024 में यह संख्या करीब 3.99 लाख और वर्ष 2025 में 3.21 लाख रही। उन्होंने कहा कि बेहतर व्यवस्थाओं और बुनियादी सुविधाओं के कारण देश-विदेश से श्रद्धालुओं का विश्वास बढ़ा है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार तीर्थ स्थलों की पवित्रता बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के प्रमुख धार्मिक स्थलों काशी, अयोध्या, और प्रयागराज सहित अन्य तीर्थ स्थलो में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या राज्य की बेहतर व्यवस्थाओं का प्रमाण है। सरकार का प्रयास है कि धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिले, अधिकाधिक श्रद्धालु आएं और पर्यटन अर्थव्यवस्था भी सशक्त हो।

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICE

ADDRESS- Naini,Prayagraj U.P-211008. PAN No. ABJPA1540R,Reg.No.03-0068604

Regd. Under Additional Director General of Police U.P. vide Reg. No. 2453
+91-7985619757,+91-7007472337

We Are Providing Security & Manpower Services in School/ University/Institute/ Hospital/Office Premises

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES:-
takes great pleasure in Providing Security arrangement and Office Staff for your Organization premises. We have with us talented and well trained Disciplined persons, each having exposure to industrial/commercial security and intelligence knowledge in their field. Our personnel's are physically fit, courageous disciplined and well trained in their field. They are bold but polite, peace loving but not coward, friendly but shrews while duty, sharp in act but very claim and affable where presence of mind is lost by the common man, ailing but smelling the red hounds, work in the common climate but vigilant and faithfully to the organization. It is on account of the above trait that our services are engaged by reputed organization which consists of Schools, University, Banks, Government, industrial Concern, Hotels, Hospitals, Educational Institutes, Housing Societies/Bungalows, Semi Government and Government Organization.

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES is registered by:-
Additional Director General of Police, (Law & Order), Deputy Labour Commissioner, Employees Provident Fund Organization, Employees State Insurance Corporation, Goods & Services Tax, MSME Registration..(Govt. of

FOR JOB CONTACT:- 9569430885

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES Manpower Category:-
Assignment Manager, Housekeeping Manager, Assignment Supervisor, Housekeeping Supervisor, Accountant, Driver, Computer Operator, Electrician, Data Entry operator, Carpenter, Clerk, Office Boy, M.T.S, Sweeper, Peon, Gardner, Computer Teacher, Agriculture Labour, TGT & PGT Teacher, Quality/Technical Manpower as per your requirement

एस.आई.आर.डी मे विभिन्न विषयो पर विशेषज्ञो द्वारा दिया जा रहा है प्रशिक्षण

आधुनिक समाचार नेटवर्क लखनऊ। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में, दीनदयाल उपाध्याय राज्य ग्राम्य विकास संस्थान, बख्शी का तालाब में सरकारी, अर्धसरकारी विभागों, संस्थाओं के अधिकारियों व कर्मचारियों तथा रचनात्मक कार्यों से जुड़े लोगों को प्रशिक्षण देकर उन्हें अत्यधिक दक्ष और सक्षम बनाने का कार्य निरंतर किया जा रहा है।

इसी कड़ी में दीनदयाल उपाध्याय राज्य ग्राम्य विकास संस्थान, बख्शी का तालाब, लखनऊ द्वारा, महानिदेशक एल वेंकटेश्वर लू के संरक्षण व अपर निदेशक संस्थान सुबोध दीक्षित के मार्ग निर्देशन एवं प्रशासनिक नियंत्रण में, संस्थान प्रांगण के अन्तर्गत विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है यथा - राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, सामाजिक अंकेक्षण, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, अर्थ एवं संख्या, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा विभाग में नवनियुक्त जिला एवं ब्लॉक समन्वयकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

18 फरवरी को पूर्व प्रस्तावित, मिशन कर्मयोगी एवं विकसित भारत - 2047 विषयक बेविनार कार्यक्रम , महानिदेशक संस्थान वेंक निर्देशानुसार सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों वेंक समस्त प्रतिभागियों को, संस्थान के बुद्धा सभागार में आमंत्रित करके, मुख्य अतिथि एवं राज्य स्तरीय विशिष्ट अतिथियों तथा - प्रोफेसर डॉ मधुसूदन स्वामी, वरिष्ठ विजिटिंग फैकल्टी, ला ला बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, मसूरी, डा किशन वीर सिंह शाक्य, वे भागवत, अपर निदेशक, सोशल आडिट, उ0प्र0 द्वारा सामाजिक अंकेक्षण की अपहार्यता तथा सम्बन्धित आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता

प्रख्यात शिक्षाविद् एवं पूर्व वरिष्ठ सदस्य, लोक सेवा आयोग उ0प्र0, योगेंद्र सिंह, सेवा निवृत्त जनपद एवं सत्र न्यायाधीश तथा विजय कृष्ण भागवत, अपर निदेशक, सोशल आडिट, उ0प्र0 की गरिमामई उपस्थिति में, प्रशिक्षण कार्यक्रमों से सम्बंधित प्रमुख वार्ताकारों द्वारा विषयगत प्रासंगिक बिन्दुओं पर विस्तृत रूप से विचार प्रकट किए गए।

महर्षि प्रोफेसर डॉ मधुसूदन स्वामी एवं किशन वीर सिंह शाक्य द्वारा मिशन कर्मयोगी एवं विकसित भारत - 2047 के विजनरी ऐजेण्डा बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में, ज्ञान, कौशल दक्षता, सकारात्मक दृष्टिकोण परिवर्तन, सामाजिक समरसता, आपसी समन्वय एवं सहयोग तथा राष्ट्र के विकास के सन्दर्भ में, भारत सरकार द्वारा संचालित अभीष्ट एवं महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग की भावना से, निष्ठा एवं ईमानदारी से कार्य करने के सरल उपकरणों पर विधिवत चर्चा की।

इस कार्यक्रम के दौरान योगेंद्र सिंह, सेवा निवृत्त जनपद एवं सत्र न्यायाधीश द्वारा उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पर विधिवत चर्चा करने के साथ, जागरूकता से सम्बंधित विषयों पर सचेत रहने की आवश्यकता पर विशेष बल प्रदान किया। वी पर विशेष व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर, अध्यक्षीय संबोधन वेंक अन्तर्गत महानिदेशक संस्थान एल0 वेंकटेश्वर लू द्वारा प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि प्रत्येक मिशन कर्मयोगी एवं विकसित भारत - 2047 विषयक बेविनार कार्यक्रम में, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय मनीषी विद्वानों को आदर पूर्वक इसलिए आमंत्रित करते हैं, जिससे कि नवाचार एवं राष्ट्र के विकास में सहायक विषयगत बिन्दुओं के माध्यम से आप सभी के ज्ञान और कौशल दक्षता में वृद्धि होने के साथ सार्थक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण परिवर्तन भी हो।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन डा नवीन कुमार सिन्हा द्वारा किया गया तथा प्र0 अपर निदेशक संस्थान सुबोध दीक्षित द्वारा आदरपूर्वक सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कार्यक्रम के आयोजन एवं प्रबंधन के दृष्टिगत संस्थान के सहायक निदेशक डा0 राज किशोर यादव, डा0 सत्येन्द्र कुमार गुप्ता, डा0 वरूण चतुर्वेदी , डा0 रंजना सिंह संकाय सदस्य मोहित यादव, धर्मेंद्र कुमार सुमन, प्रचार सहायक मोहम्मद शहंशाह तथा कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग आफिसर उपेंद्र कुमार दूबे का सराहनीय एवं उल्लेखनीय योगदान रहा है।

आदिवासी नायकों को मिले उचित सम्मान,एआईपीएफ के जिला सचिव इंद्रदेव खरवार ने दिया सांसद को पत्र

शीघ्र बने स्मारक, परिवारों को मिले विशेष लाभ

आधुनिक समाचार नेटवर्क सोनभद्र। 19 फरवरी 2026, जनपद के आजादी आंदोलन के आदिवासी नायकों विशेषकर बभनी के घघरा गांव के स्वर्गीय शनिचर राम खरवार और चौवना गांव के स्वर्गीय रामेश्वर सिंह खरवार को उचित सम्मान मिलना चाहिए, अतिशीघ्र उनका स्मारक बनाना चाहिए और उनके परिवारों को लाभ प्रदान करना चाहिए। यह मांग कल बभनी के

घघरा गांव में आयोजित खरवार समाज की बैठक में उपस्थित राबर्ट्सगंज सांसद छोटेलाल सिंह खरवार को ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट के जिला सचिव इंद्रदेव सिंह खरवार ने पत्र देकर की। उन्होंने सांसद को बताया कि जनपद में आदिवासियों के साथ बड़ा अन्याय हो रहा है। लगातार निवेदन के बावजूद स्वतंत्रता संग्राम में जेल गए आदिवासी नायकों को आजादी के अमृत काल में भी सम्मान नहीं दिया जा रहा। यहां तक कि उनका स्मारक तक नहीं बनाया गया। जबकि इस बाबत तमाम जनप्रतिनिधियों ने सरकार से अनुरोध किया है। उन्होंने सांसद को बताया कि जनपद में आदिवासियों की जनसंख्या के अनुरूप उनके लिए पंचायत चुनाव में सीट आरक्षित नहीं की गई है। इसके कारण बेहद कम आदिवासी प्रतिनिधि पंचायत में चुनाव लड़ पा रहे हैं। यह भी सांसद के संज्ञान में लाया गया कि 1961 से पहले जनगणना में आदिवासी धर्म का कालम था और यह इसलिए था क्योंकि आदिवासी प्रकृति के उपासक हैं। उनका अपना धर्म, बोली, भाषा, परंपरा, संस्कृति, संस्कार और रीति रिवाज हैं। लेकिन उसके बाद जनगणना में आदिवासी धर्म के कोड को खत्म कर दिया गया। इसलिए अप्रैल से शुरू हो रही जनगणना में आदिवासी धर्म कोड को भी शामिल करने के लिए संसद में आवाज उठाने का अनुरोध भी किया गया।

घोरावल सीएचसी में कर्मचारियों की हुई बैठक,फाइलेरिया अभियान, रोकथाम पर हुई चर्चा

आधुनिक समाचार नेटवर्क सोनभद्र। जनपद के घोरावल

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में गुरुवार शाम करीब तीन बजे अधीक्षक डॉ. नरेंद्र सरोज की अध्यक्षता में चिकित्सकों और स्टाफ की बैठक हुई। इसमें फाइलेरिया अभियान, अस्पताल की साफ-सफाई और मरीजों को उचित इलाज देने पर जोर दिया गया। बैठक में भारत सरकार और राज्य स्तर से आने वाली टीमों के मद्देनजर तैयारियों की समीक्षा की गई। सभी चिकित्सकों, फार्मासिस्टों और स्टाफ नर्सों को मरीजों को ईमानदारी से उचित इलाज, परामर्श, जांच और सलाह की सुविधा प्रदान करने के निर्देश दिए गए। एमआर (मीजल्स-रूबेला) अभियान की भी समीक्षा की गई। सभी कर्मचारियों को समय पर उपस्थित रहकर अपनी सेवाएं देने के लिए कहा गया। आयुष्मान कार्ड के लाभार्थियों पर विशेष ध्यान देने और यदि उनका कार्ड नहीं बना है तो उसे बनवाने के निर्देश भी दिए गए।इस अवसर पर डॉ. प्रशांत पाल, डॉ. देवेश पांडे, डॉ. सुनील कुमार सिंह, डॉ. ए.पी. सिंह, डॉ. गौरव सिंह, स्टाफ नर्स शीला और कौशल्या, लैब टेक्नीशियन रामानंद मौर्य, ओटी टेक्नीशियन कामेश्वर राय, फार्मासिस्ट अमित, राजीव सिंह और आशीष शुक्ला सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा क्लब द्वारा नुक्कड़ नाटक का किया गया आयोजन

सोनभद्र। शहर के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ओबरा

में गुरुवार को महाविद्यालय के सड़क सुरक्षा क्लब द्वारा नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ) प्रमोद कुमार द्वारा सर्वप्रथम महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को सड़क सुरक्षा के नियमों से अवगत कराया, तत्पश्चात छात्र-छात्राओ द्वारा नुक्कड़ नाटक किया गया। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगो को सड़क सुरक्षा के नियमों से अवगत कराया गया, सड़क पर चलते समय क्या-क्या सावधानियां होनी चाहिए जिससे अप्रत्याशित घटनाएं न हो सके, इसके बारे में भी नुक्कड़ नाटक के माध्यम से सभी को अवगत कराया गया। सड़क पर होने वाली घटनाओं को प्रेक्टिकल करके बताने का प्रयास किया गया इस कार्यक्रम का संचालन सड़क सुरक्षा प्रभारी डॉक्टर आलोक यादव ने किया। इस अवसर, ड्रॉक्टर विकास कुमार, डॉक्टर संतोष कुमार सैनी, उपेंद्र कुमार, डॉ विभा पाण्डेय डॉक्टर सचिन कुमार, डॉक्टर संघमित्रा, डॉक्टर वैशाली शुक्ला, इत्यादि प्राध्यापकगणों के साथ साथ रोवर्स रेंजर के ट्रेनर्स अन्य महाविद्यालयों से आए सम्मानित प्राध्यापक व राजेश्वर रंजन, धर्मेंद्र कुमार, सरफुद्दीन इत्यादि कर्मचारीगण तथा छात्रावास के छात्र एवं महाविद्यालय के सैकड़ो छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

रमजान और होली सौहार्दपूर्ण मनाने की करी अपील

सोनभद्र। आने वाले दिनों में रमजान और होली के मद्देनजर

गुरुवार शाम बीजपुर थाना प्रांगण में पीस कमेटी की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। क्षेत्राधिकारी दुद्धी राजेश कुमार राय और थानाध्यक्ष बीजपुर राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में स्थानीय जनप्रतिनिधियों और संभ्रांत नागरिकों ने हिस्सा लिया। बैठक का मुख्य उद्देश्य दोनों त्योहारों को शांतिपूर्ण, सुरक्षित और आपसी भाईचारे के साथ संपन्न कराना था। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि त्योहारों के दौरान हुड़दंग करने वालों पर कड़ी नजर रखी जाएगी। क्षेत्राधिकारी ने उपस्थित लोगों से परिचय प्राप्त कर क्षेत्र की स्थिति का जायजा भी लिया।

प्रशासनिक जानकारी के अनुसार, इस वर्ष क्षेत्र में कुल 63 स्थानों पर होलिका दहन किया जाएगा। पुलिस प्रशासन ने इन सभी स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था और साफ-सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

रमजान के दौरान इबादतगाहों के आसपास भी आवश्यक व्यवस्थाएं बनाए रखने पर चर्चा हुई। बैठक में क्षेत्र के हिंदू-मुस्लिम समुदाय के प्रतिनिधियों और ग्राम प्रधानों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। गुलशने रजा कमेटी के प्रबंधक नेसार अहमद, ग्राम प्रधान खमरिया इजाजत शेख, हाजी खलील, मुख्तार अहमद, नसीम खान, बद्री नाथ प्रधान रजमिलान, विश्राम सागर गुप्ता, राधेश्याम गुर्जर, सुरेंद्र अग्रहरि, अरविंद सिंह, उस्मान खान सहित कई ग्रामीण उपस्थित रहे। क्षेत्राधिकारी ने अंत में सभी से अपील की कि किसी भी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दें और संदिग्ध गतिविधि दिखने पर तुरंत पुलिस को सूचित करें।

श्री कृष्ण रासलीला में कालिया नाग दमन के लीला का हुआ मंचन,कालिया नाग के मान मर्दन की लीला का किया गया मंचन

कालिया नाग के फन पर श्री कृष्ण ने किया नृत्य

आधुनिक समाचार नेटवर्क सोनभद्र। कालिया नाग के फन

पर कृष्ण के नृत्य की लीला को देखने के लिए लीला प्रेमियों की भीड़ उमड़ पड़ी। नगर के रामलीला प्रांगण में आयोजित रासलीला के चतुर्थ दिवस कालिया नाग के मान मर्दन की लीला का मंचन किया गया। वृन्दावन से आए कलाकारों ने शानदार लीला का मंचन कर लीला प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री कृष्ण रासलीला के मंचन के दौरान कलाकारों द्वार दिखाया गया कि श्रीकृष्ण मित्रों के साथ यमुना नदी के किनारे गेंद से खेल रहे थे। भगवान ने जोर से गेंद फेंकी और वो यमुना में जा गिरी। गेंद भारी होने से वो सीधे यमुना के तल पर चली गई। समस्या यह थी कि उस समय यमुना में कालिया नाग रहता था। पांच फनों वाला नाग बहुत खतरनाक और विषधर था। उसके विष से यमुना काली हो

रही थी और उसी जहर के कारण गोकुल के पशु यमुना का पानी पी कर मर रहे थे। कान्हा बहुत छोटे थे, लेकिन मित्रों के जोर के कारण उन्होंने तय किया कि गेंद वो ही निकाल कर लाएंगे। कान्हा ने यमुना में छलांग लगा दी। कृष्ण ने कालिया नाग की पूंछ पकड़कर उसे मारना शुरू कर दिया। कालिया नाग अपने प्राण की रक्षा के लिए कृष्ण से दुहाई देने लगा। कृष्ण ने उसे यमुना छोड़कर समुद्र में जाने के लिए वचबद्ध किया। इसके बाद कालिया नाग के फन पर नृत्य किया। इस तरह भगवान कृष्ण ने मथुरावासियों को कालिया नाग के साथ यमुना को उसके विष से मुक्ति दिलाई। इससे पूर्व बांके बिहारी की अनुपम छटा की भव्य आरती की गई। इस अवसर पर समिति के संरक्षक- जितेंद्र सिंह, कृष्ण मुरारी गुप्ता, संयोजक रामप्रसाद यादव, अध्यक्ष सचिन गुप्ता, महामंत्री धीरज जालान, राकेश गुप्ता, बचाऊं पाण्डेय, संदीप चौरसिया अशोक श्रीवास्तव मनोज सिंह, हर्षवर्धन, राजेश सोनी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

तत्परता से कार्य कर पुलिस व चाइल्ड लाइन ने निभाई संवेदनशील जिम्मेदारी

पुलिस ने 3 वर्षीय मासूम को सुरक्षित परिजन से मिलाया

आधुनिक समाचार नेटवर्क सोनभद्र। पुलिस की संवेदनशील

एवं त्वरित कार्यवाही के परिणामस्वरूप 3 वर्षीय बालिका को सकुशल उसके परिजनों से मिलाया गया। गुरुवार को थाना ए.एच.टी. सोनभद्र को सूचना प्राप्त हुई कि एक लगभग 3 वर्षीय बालिका पुलिस लाइन तिराहा मेन रोड के पास अकेली भटकती हुई मिली है। सूचना प्राप्त होते ही थाना ए.एच.टी. की टीम एवं चाइल्ड लाइन 1098 के सदस्यों द्वारा तत्काल मौके पर पहुँचकर बालिका को सुरक्षित संरक्षण में लिया गया।टीम द्वारा आसपास के क्षेत्रों में पूछताछ एवं आवश्यक खोजबीन की गई। सतत प्रयासों के उपरांत ज्ञात हुआ कि उक्त बालिका मूल रूप से अनपरा क्षेत्र की निवासिनी है तथा अपनी बुआ के साथ चुर्क आई हुई थी। प्रातःकाल खेलते-खेलते वह अनजाने में घर से दूर निकल गई थी। सभी आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण करने के उपरांत बालिका को सकुशल उसके परिजनों के सुपुर्द किया गया। बालिका को सुरक्षित पाकर परिजनों ने पुलिस एवं चाइल्ड लाइन टीम के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रभारी निरीक्षक थाना ए.एच.टी. माधव सिंह ने बताया कि यदि किसी को कोई लापता/गुमशुदा/भटका हुआ बालक या बालिका मिले तो तत्काल थाना ए.एच.टी. के सीयूजी मोबाइल नंबर 9454404294 अथवा चाइल्ड हेल्पलाइन के टोल फ्री नंबर 1098 पर सूचना दें। आपका एक छोटा सा प्रयास किसी मासूम को उसके परिवार से मिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने किया प्रदर्शन राज्यपाल के नाम सौंपा ज्ञापन

आधुनिक समाचार नेटवर्क सोनभद्र। गुरुवार को जिला

कांग्रेस कमेटी सोनभद्र के अध्यक्ष रामराज सिंह गोंड के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं तथा पदाधिकारी ने पिछले दिनों उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय सहित कांग्रेस जनों पर लाठी चार्ज की घटना को लेकर राज्यपाल के नाम संबोधित ज्ञापन जिला अधिकारी के प्रतिनिधि को सौपा।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट परिसर स्थित गांधी प्रतिमा के पास बैठकर 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम' का भजन किया। जिला अध्यक्ष रामराज सिंह गोंड ने बताया कि 17 फरवरी को राष्ट्रीय आवाहन पर मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत विधानसभा घेराव का कार्यक्रम पूर्व निर्धारित था।

प्रदेश भर के कांग्रेस पदाधिकारी कार्यकर्ता अपने प्रदेश कार्यालय से विधानसभा का घेराव करने शांतिपूर्ण एवं गांधीवादी तरीके से जा रहे थे और सरकार के इशारे पर पुलिस द्वारा निर्दोष कार्यकर्ताओं पर बर्बरता पूर्वक लाठी चार्ज किया गया।

जिसमें हमारे प्रदेश अध्यक्ष समेत कई जिलों के कार्यकर्ता प्रदेश पदाधिकारी घायल हुए। इसके विरोध में आज हम लोग यहां पर गांधी प्रतिमा के सामने अपने लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए भजन कीर्तन कर रहे हैं और हम महामहिम राज्यपाल महोदय से यह मांग करते हैं कि आम जनता की आवाज उठाने का अधिकार जो राजनीतिक पार्टियों को मिला है उसको लोकतांत्रिक तरीके से करने का उनका हक छीना जा रहा है। पुलिस और प्रशासन के बल पर आंदोलन को कुचला जा रहा है। कांग्रेस जन संवैधानिक ढंग से आगे भी धरना प्रदर्शन एवं जनता की आवाज बनकर सरकार के गलत नीतियों का विरोध करते रहेंगे।

उक्त कार्यक्रम में पूर्व शहर अध्यक्ष राजीव त्रिपाठी, जिला प्रवक्ता कन्हैयालाल पांडे, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता जितेंद्र देव पांडे, पिछड़ा प्रकोष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष सेत राम केसरी, दयाशंकर पांडे, बाबूलाल पनिका, तमेश्वर तिवारी, लल्लू राम पांडे, शीतला सिंह पटेल, नियाज अहमद खान आदि लोग शामिल रहे।

जीपीडीपी कार्यशाला संपन्न,पंचायती राज विभाग ने ग्राम प्रधानों को दिया प्रशिक्षण

सोनभद्र। जिले में पंचायती राज विभाग द्वारा ग्राम पंचायत

विकास योजना (जीपीडीपी) विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला पंचायती राज विभाग के हॉल में संपन्न हुई, जिसमें ग्राम प्रधानों, पंचायत सहायकों, सचिवों और सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तर प्रदेश के अपर जिला पंचायत राज अधिकारी राजेश कुमार सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसके बाद प्रशिक्षकों संदीप कश्यप, विकास शर्मा और अंजली पांडेय ने ग्राम पंचायत विकास योजना और सतत विकास लक्ष्यों जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की। वरिष्ठ फैकल्टी हेड राजेश कुमार त्रिपाठी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में विकास कार्यों में ग्राम पंचायत विकास योजना की कार्यप्रणाली को बढ़ावा देना एक प्रमुख लक्ष्य है। उन्होंने सतत विकास लक्ष्य के नौ थीमों में महिला भागीदारी को विशेष रूप से प्रोत्साहित करने पर जोर दिया, जिससे महिला सशक्तिकरण को भी बढ़ावा मिलेगा। सहायक फैकल्टी हेड राहुल पांडेय ने भी अधिक से अधिक संख्या में प्रशिक्षण में भाग लेने की अपील की। इंटिको प्राइवेट लिमिटेड द्वारा कार्यक्रम में आए हुए सभी प्रतिभागियों के लिए नाश्ते और भोजन की समुचित व्यवस्था की गई थी।

विन्ध्य तक्षशिला नेशनल एकेडमी में 'कल संगम' का आयोजन

आधुनिक समाचार नेटवर्क सोनभद्र। विन्ध्य तक्षशिला नेशनल

एकेडमी, उरमौरा में गुरुवार को 'कल संगम' प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ एस.एन.सिंह (आई.एफ.एस), राजस्थान सरकार के द्वारा किया गया। बच्चों ने स्वागत गीत से उनका स्वागत किया। प्रदर्शनी में बच्चों ने तरह-तरह के क्राफ्ट, बनाये जो बहुत आकर्षक थे। विज्ञान प्रदर्शनी में चंद्रयान 3, ज्वालामुखी, जल तरंग, इलेक्ट्रि सर्किट, कम्प्यूटर के मॉडल्स आदि, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत में भी साहित्य एवं व्याकरण के प्रोजेक्ट प्रस्तुत किये गये। प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण फर्श पर भारत के मानचित्र में भौगोलिक विभाजन, राजनैतिक विभाजन, फसलें तथा नेशनल पार्क को दर्शाया गया। वासत्व में बच्चों की मेहनत एवं प्रयास सराहनीय है। प्रदर्शनी को सफल बनाने में डा0 अंजली विक्रम सिंह, कंजन श्रीवास्तव, चंचल, शालिनी, रिया, वन्दना, काजल, आदि की अहम भूमिका रही।

यातायात नियमों के उल्लंघन पर की सख्त कार्रवाई, 4 ऑटो एवं 1 पिकप वाहन सीज

आधुनिक समाचार नेटवर्क सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक

अभिषेक वर्मा के निर्देशन में जनपद में सुचारु यातायात व्यवस्था बनाए रखने हेतु चलाए जा रहे प्रवर्तन अभियान के क्रम में यातायात प्रभारी निरीक्षक कृष्ण कुमार शुक्ला एवं यातायात पुलिस द्वारा थाना रॉबर्ट्सगंज क्षेत्रान्तर्गत सुकृत रोड के किनारे खड़े वाहन, रांग साइड से चलने वाले वाहन एवं बिना नंबर प्लेट/बिना वैद्य प्रपत्र के संचालित वाहनों के विरुद्ध सघन चेकिंग अभियान चलाकर प्रवर्तन की कार्यवाई की गई। बढ़ौली से सब्जी मंडी सर्विस रोड पर दो ऑटो चालक बिना वैध ड्राइविंग लाइसेंस के अवैध रूप से सवारी भरते पाए गए। इसके अतिरिक्त धर्मशाला से वाराणसी रोड सर्विस रोड पर दो डग्गामार ऑटो, जिनका स्टैंड फ्लाईओवर के नीचे नगर पालिका द्वारा निर्धारित है, निर्धारित स्थान के बजाय केंद्रीय सर्विस रोड पर सवारी भरते पाए गए, जिससे अनावश्यक जाम की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। उक्त वाहनों में रांग साइड से चलने वाले वाहनों में 01 पिकप (बिना वैद्य प्रपत्र) को एवं 04 ऑटो वाहनों के विरुद्ध मोटर वाहन अधिनियम के अंतर्गत वैधानिक कार्यवाही करते हुए उन्हें सीज किया गया। पुलिस द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी। आमजन से अपील है कि यातायात नियमों का पालन करें एवं निर्धारित स्थानों से ही वाहन संचालन/सवारी भरें, जिससे सुगम एवं सुरक्षित यातायात व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके।

पाकिस्तान की सबसे बड़ी जीत-अभिषेक इस बार भी खाता नहीं खोल सके, भारत ने लगातार 12वां वर्ल्डकप मैच जीता

नयी दिल्ली। टी-20 वर्ल्ड कप में बुधवार को पाकिस्तान ने नामीबिया को 102 रन से हराकर सुपर-8 स्टेज में एंट्री कर ली। यह

टीम की वर्ल्ड कप में रन के अंतर से सबसे बड़ी जीत रही। दूसरी ओर टीम इंडिया ने टूर्नामेंट इतिहास में रिकॉर्ड 12वां लगातार मैच जीत लिया। वहीं टीम के ओपनर अभिषेक शर्मा लगातार तीसरे मुकाबले में खाता नहीं खोल सके।पाकिस्तान ने बुधवार को नामीबिया के खिलाफ 199 रन बनाने के बाद उन्हें 97 रन पर समेट दिया। टीम ने 102 रन से मुकाबला जीता। यह टी-20 वर्ल्ड कप में रन के अंतर से पाकिस्तान की सबसे बड़ी जीत रही। इससे पहले 2009 में टीम नीदरलैंड को लॉर्ड्स स्टेडियम में 82 रन से हरा चुकी है।भारत टी-20 वर्ल्ड कप में लगातार 12वां मैच जीत चुका है। 2024 में लगातार 8 मैच जीतने के बाद टीम ने 2026 में 4 मैच और जीत लिए। टूर्नामेंट इतिहास में भारत से ज्यादा लगातार मैच किसी भी टीम ने नहीं जीते। ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका की टीमें लगातार 8-8 मैच जीत चुकी हैं।टीम इंडिया के ओपनर अभिषेक शर्मा टी-20 वर्ल्ड कप के लगातार तीसरे मैच में खाता नहीं खोल सके। अमेरिका के खिलाफ उन्हें अली खान ने पवेलियन भेजा, तब पहली गेंद पर ही आउट हो गए। पाकिस्तान के खिलाफ 4 गेंदें खेलने के बाद वे सलमान अली आगा की गेंद पर कैच हो गए। वहीं नीदरलैंड के खिलाफ वे आर्यन दत्त की गेंद पर बोल्ड हो गए। इस बार उन्होंने 3 गेंदें खेलीं। नामीबिया के खिलाफ वे बीमारी के कारण खेल नहीं सके थे। वे टूर्नामेंट में 8 गेंदें खेलने के बाद भी खाता नहीं खोल सके। उनसे पहले भारत के आशीष नेहरा भी लगातार 3 टी-20 में खाता खोले बगैर आउट हो चुके हैं।

नीदरलैंड के खिलाफ टी-20 में भारत ने 7 गेंदबाजों का इस्तेमाल किया। यह एक मुकाबले में भारत की ओर से दूसरे सबसे ज्यादा गेंदबाज रहे। टीम ने पाकिस्तान के खिलाफ भी 7 ही बॉलर्स से गेंदबाजी कराई थी।

टी-20 वर्ल्ड कप में भारत 12 गेंदबाजों से बॉलिंग करा चुका है। एक वर्ल्ड कप में यह टीम इंडिया की ओर सबसे ज्यादा है, इससे पहले टीम ने 2009 में 11 बॉलर्स से गेंदबाजी कराई थी। भारत इस टूर्नामेंट में 9 कैच छोड़ चुका है, जो आयरलैंड के 10 कैचों के बाद सबसे ज्यादा है। नीदरलैंड ने बगैर फिफ्टी लगाए अपना बेस्ट टी-20 स्कोर बनाए। टीम ने 7 विकेट खोकर 176 रन बनाए। इससे पहले 2018 में टीम ने नेपाल के खिलाफ 174 रन बनाए थे। नीदरलैंड ने टी-20 वर्ल्ड कप में अपना दूसरा बेस्ट स्कोर बनाया। टीम इससे पहले 2014 में आयरलैंड के खिलाफ 13.5 ओवर में ही 193 रन बना चुकी है।

टी-20 वर्ल्डकप

भारत ने लगातार चौथा मैच जीत दर्ज की,नीदरलैंड को 17 रन से हराया; दुबे की वर्ल्डकप में पहली फिफ्टी, चक्रवर्ती को 3 विकेट

नयी दिल्ली। भारत ने टी-20 वर्ल्ड कप 2026 में लगातार चौथा मैच जीत लिया है। टीम ने बुधवार

के तीसरे मैच में नीदरलैंड को 17 रन से हराया। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में ग्रुप ए के इस मैच में भारत ने टॉस जीतकर बैटिंग चुनी।भारतीय टीम ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 193 रन बनाए। जवाब में नीदरलैंड 20 ओवर में 7 विकेट पर 176 रन ही बना सकी। शिवम दुबे ने ऑलराउंड प्रदर्शन किया। वे प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए। नीदरलैंड की ओर से बास डी लीडे ने सबसे ज्यादा 33 रन बनाए। अन्य कोई बल्लेबाज 30 रन का आंकड़ा पार नहीं कर सका। वरुण चक्रवर्ती ने 3 विकेट झटके। शिवम दुबे को 2 विकेट मिले। जसप्रीत बुमराह और हार्दिक पंड्या के हिस्से एक-एक विकेट आया।टीम इंडिया की ओर से शिवम दुबे ने 66 रन बनाए। यह वर्ल्डकप में उनकी पहली फिफ्टी है। हार्दिक पंड्या ने 30 रन बनाए। लोगन वान बीक ने 3 विकेट झटके। आर्यन दत्त को 2 विकेट मिले।भारतः ईशान किशन (विकेटकीपर), अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, सूर्यकुमार यादव (कप्तान), हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, रिंकू सिंह, वॉशिंगटन सुंदर, अर्शदीप सिंह वरुण चक्रवर्ती और जसप्रीत बुमराह।नीदरलैंडः माइकल लेविट, मैक्स ओ'डाउड, बास डी लीडे, कॉलिन एकरमैन, स्कॉट एडवर्ड्स (कप्तान), जाक लियोन-कैशे, नुआ क्रॉस, रूलोफ वान डर मर्व, लोगन वान बीक, आर्यन दत्त और काइल क्लीन।

हमारा ब्लड प्रेशर लो क्यों होता है? इन 10 संकेतों को कभी न करें नजरअंदाज

नयी दिल्ली। आजकल खराब लाइफस्टाइल के कारण लोगों में हाई और लो ब्लड

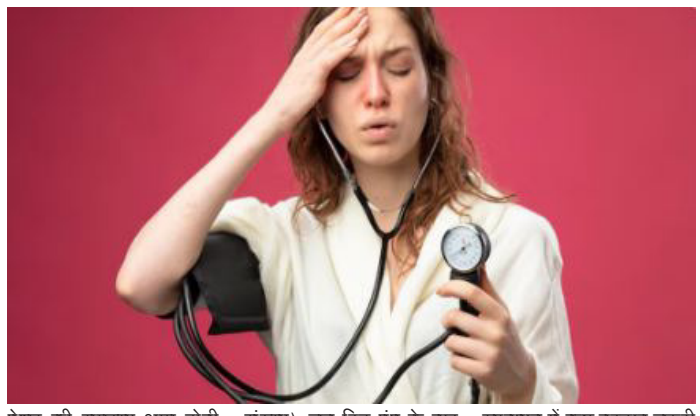

प्रेशर की समस्या आम होती जा रही है। लो ब्लड प्रेशर को मेडिसिन की भाषा में हाइपोटेंशन और हाई ब्लड प्रेशर को हाइपरटेंशन कहा जाता है। हालांकि कभी-कभार बीपी का थोड़ा ऊपर-नीचे होना सामान्य है। लेकिन अगर यह अक्सर होने लगे तो गंभीर स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकता है।

नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, लो ब्लड प्रेशर अक्सर बिना किसी खास लक्षण के होता है। इसलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि यह समस्या कब सामान्य है और कब डॉक्टर के पास जाने की जरूरत होती है। तो चलिए,

आज फिजिकल हेल्थ कॉलम में हम लो ब्लड प्रेशर के बारे में विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- लो ब्लड प्रेशर क्या है और ये किन कारणों से होता है? इस समस्या से कैसे बचा जा सकता है?जब हार्ट खून को पूरे शरीर में पंप करता है तो वह नसों की दीवारों पर दबाव डालता है, जिसे ब्लड प्रेशर कहते हैं।

अगर यह दबाव सामान्य से कम यानी 90/60 mmHg (मिलीमीटर ऑफ मर्करी) से नीचे चला जाता है तो उसे लो ब्लड प्रेशर कहते हैं। इस स्थिति में शरीर के अंगों को पर्याप्त मात्रा में ब्लड और ऑक्सीजन नहीं मिल पाता, जिससे व्यक्ति को चक्कर आना, थकान, धुंधला दिखना और कभी-कभी बेहोशी जैसी समस्याएं हो सकती हैं। ब्लड प्रेशर की माप में दो संख्याएं होती हैं। सिस्टोलिक (ऊपरी संख्या): जब दिल खून पंप करता है।

डायस्टोलिक (निचली संख्या): जब दिल पंप के बाद विश्राम करता है। आमतौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति का बीपी लगभग 120/80 स्स्पु होना चाहिए। जब यह स्तर काफी नीचे चला जाए तो यह शरीर के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकता है। ब्लड प्रेशर बहुत कम होने पर शरीर के अंगों को पर्याप्त ब्लड और ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है। इससे व्यक्ति को चक्कर आना, थकान, धुंधलापन या बेहोशी जैसी समस्याएं हो सकती हैं। कई बार बैठने या खड़े होने के तुरंत बाद ये लक्षण अचानक महसूस होते हैं। ब्लड प्रेशर लो होने के पीछे डिहाइड्रेशन और हार्ट संबंधी समस्याएं, हॉर्मोनल असंतुलन और खून की कमी समेत कई कारण शामिल हैं।

महिलाओं में प्रेग्नेंसी के दौरान हार्मोनल बदलावों की वजह से भी ब्लड प्रेशर गिर सकता है, जो आमतौर पर डिलीवरी के बाद अपने आप सामान्य हो जाता है। इसके अलावा गर्म मौसम, तनाव, डर या अचानक दर्द जैसी स्थितियां भी अस्थायी रूप से बीपी कम कर सकती हैं।

लो ब्लड प्रेशर का इलाज इसके कारण पर निर्भर करता है। आमतौर पर लाइफस्टाइल में बदलाव जैसे ज्यादा पानी पीना, धीरे-धीरे उठना और थोड़ा नमक ज्यादा खाना इसमें मददगार हो सकता है। कुछ मामलों में डॉक्टर दवाएं भी लिख सकते हैं।

वहीं अगर कोई दवा बीपी को गिरा रही है तो डॉक्टर उसकी खुराक घटा सकते हैं या दवा बंद कर सकते हैं। लो ब्लड प्रेशर की समस्या से बचने के उपाय लो बीपी से बचने के लिए लाइफस्टाइल और खानपान में कुछ बदलाव जरूरी है।

लो ब्लड प्रेशर हमेशा खतरनाक नहीं होता है। कुछ लोगों में यह बिना किसी लक्षण के भी हो सकता है। वहीं अगर इससे अक्सर चक्कर, थकान या बेहोशी जैसे लक्षण दिखें तो यह किसी छिपी हुई स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकता है।

अगर आपको चक्कर आना, कमजोरी, धुंधलापन या बेहोशी जैसा महसूस हो तो तुरंत बैठ जाएं या लेट जाएं। अपने पैरों को ऊपर की ओर उठाएं ताकि दिमाग तक ब्लड फ्लो बढ़ सके।

गहरी और धीमी सांस लें, घबराएं नहीं। पानी या ORS पिएं क्योंकि डिहाइड्रेशन भी एक कारण हो सकता है।अगर खाली पेट हैं तो हल्का और जल्दी पचने वाला कुछ खाएं, जैसे बिस्किट या फल। अगर लक्षण बने रहें या बेहोशी जैसा महसूस हो रहा हो तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

ध्यान रखें कि अगर यह स्थिति बार-बार हो रही है तो इसे मामूली न समझें। यह किसी गंभीर समस्या का संकेत हो सकता है, जिसका जांच और इलाज जरूरी है।

डॉ. संजीव अग्रवाल बताते हैं कि हां, खाने-पीने की गलत आदतें लो ब्लड प्रेशर को प्रभावित कर सकती हैं। पर्याप्त पानी न पीना, शराब का ज्यादा सेवन और बहुत हल्का या अनियमित भोजन करने से बीपी गिर सकता है।

खासकर डिहाइड्रेशन की स्थिति में यह और बिगड़ सकता है। हां, नियमित हल्की एक्सरसाइज जैसे वॉकिंग, योग या स्ट्रेचिंग से ब्लड सर्कुलेशन सुधरता है और लो बीपी कंट्रोल में रह सकता है। लेकिन बहुत तेज या हैवी एक्सरसाइज से बीपी गिर सकता है, इसलिए एक्सरसाइज हमेशा शरीर की क्षमता और डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही करें।

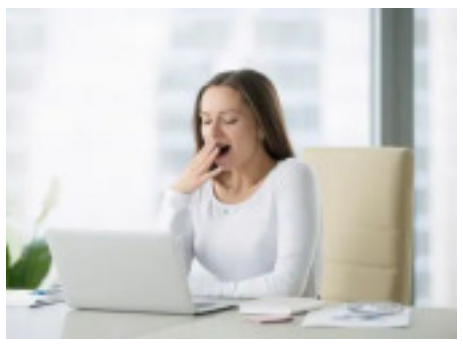

अगर इसे लंबे समय तक अनदेखा किया जाए तो यह दिमाग, दिल और किडनी जैसे अहम अंगों तक ब्लड और ऑक्सीजन की सप्लाई को प्रभावित कर सकता है।

इससे बेहोशी, ऑर्गन फेल्योर या शॉक जैसी गंभीर स्थिति बन सकती है। इसलिए समय रहते सही कारण की पहचान और इलाज कराना बेहद जरूरी है।

क्या आपको बहुत ज्यादा जम्हाई आती हैःहो सकता है इन 7 हेल्थ प्रॉब्लम्स का संकेत

नयी दिल्ली। जम्हाई लेना हमारे शरीर की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह अक्सर थकान, नींद या बोरियत की वजह से होती है। लेकिन अगर लगातार और बिना

किसी वजह के बहुत ज्यादा जम्हाई आती है तो यह हार्ट डिजीज से लेकर न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर तक किसी अंदरूनी स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकती है। कभी-कभार ऐसा होना तो सामान्य है। लेकिन अगर नियमित रूप से बहुत ज्यादा जम्हाई आती है तो इसे नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। हालांकि कुछ आसान उपायों से इससे राहत मिल सकती है। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, जम्हाई आराम की भावना से जुड़ी होती है। इसे लंबे समय से बोरियत का संकेत माना जाता रहा है। यह संक्रामक भी है क्योंकि जम्हाई के बारे में देखने, सुनने, पढ़ने या यहां तक कि सोचने से भी जम्हाई आ सकती है। मामले को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. संचयन रॉय, सीनियर कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, दिल्ली जी से। सवाल जवाब के माध्यम से- सवालः जम्हाई क्या है? जवाब- जम्हाई वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपना मुंह चौड़ा खोलकर गहरी सांस अंदर लेता हैं और फिर छोड़ता है। यह ज्यादातर अनजाने में होती है यानी इसे रोकना मुश्किल होता है। अंग्रेजी में इसे ऑसीटेशन कहा जाता है। एक जम्हाई लगभग 4-7 सेकेंड तक चलती है और इसमें गले, मुंह और चेहरे की मांसपेशियां खिंचती हैं। यह अक्सर थकान, नींद या ऊब के कारण होती है। सवाल- उबासी या जम्हाई आने के क्या कारण हैं? जवाब- इसके कई कारण हो सकते हैं, जो अक्सर शरीर और ब्रेन की जरूरतों से जुड़े होते हैं। नींद की कमी- जब पर्याप्त नींद नहीं मिलती तो शरीर थकान महसूस करता है। इस थकान को दूर करने और शरीर को जगाए रखने के लिए उबासी आती है। मानसिक थकान या बोरियत- जब आप किसी नीरस काम में लगे होते हैं या दिमाग थक जाता है तो उबासी आ सकती है। यह दिमाग को फिर से एक्टिव करने का एक तरीका हो सकता है।ऑक्सीजन की कमी- शरीर में ऑक्सीजन की कमी होने पर भी उबासी आती है ताकि फेफड़ों में ज्यादा हवा भरी जा सके और ब्रेन तक ज्यादा ऑक्सीजन पहुंच सके। संक्रामक उबासी- किसी दूसरे व्यक्ति को उबासी लेते हुए देखने या सुनने पर हमें भी उबासी आ सकती है। यह सामाजिक व्यवहार का एक हिस्सा माना जाता है। कुछ दवाओं के कारण- कुछ खास दवाएं जैसे कि डिप्रेशन या दर्द की दवाएं भी उबासी का कारण बन सकती हैं।सवाल- बहुत ज्यादा जम्हाई किन स्वास्थ्य समस्याओं का संकेत हो सकती है? जवाब- भले ही

जम्हाई आने के सबसे आम कारण थकान, सुस्ती या बोरियत हों। लेकिन यह कुछ अंदरूनी समस्याओं से भी जुड़ी हो सकती है। ऑक्सीजन की कमी- फेफड़ों से जुड़ी बीमारी या स्लीप एप्निया जैसी स्थितियां शरीर में ऑक्सीजन के लेवल को कम कर सकती हैं, जिससे ज्यादा

ऑक्सीजन लेने के लिए बार-बार जम्हाई आती है। आयरन की कमी- शरीर में आयरन की कमी होने पर खून में ऑक्सीजन का संचार ठीक से नहीं हो पाता है। इस कमी को पूरा करने के लिए शरीर ज्यादा जम्हाई लेता है। मेटाबॉलिक या लिवर प्रॉब्लम्स- लिवर फेलियर या मेटाबॉलिज्म में गड़बड़ी भी ज्यादा थकान और जम्हाई का कारण बन सकती है। हार्ट संबंधी समस्याएं- कुछ मामलों में बहुत ज्यादा जम्हाई का संबंध हार्ट डिजीज से हो सकता है। यह वेगस नर्व के उत्तेजित होने के कारण हो सकता है। न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर- मिर्गी, मल्टीपल स्क्लेरोसिस या ब्रेन ट्यूमर जैसे न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर भी ब्रेन के संकेतों को प्रभावित कर सकती हैं। इससे जम्हाई की प्रक्रिया असामान्य हो जाती है। स्लीप डिसऑर्डर-स्लीप एप्निया के कारण भी बार-बार जम्हाई आ सकती है क्योंकि शरीर को अनिद्रा या दिन के दौरान अचानक आने वाली नींद से जूझना पड़ता है। मेंटल हेल्थ इशू- एंग्जाइटी या स्ट्रेस भी बार-बार जम्हाई का कारण बन सकते हैं क्योंकि शरीर भावनात्मक तनाव पर प्रतिक्रिया करता है। सवाल- किस स्थिति में डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी है? जवाब- अगर जम्हाई के साथ कुछ अन्य लक्षण भी हों तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। जैसेकि- सीने में दर्द, चक्कर आना या सांस लेने में दिक्कत होना। कमजोरी, सुन्नता या अचानक संतुलन खोना। धुंधला दिखना, कन्फ्यूजन या बोलने में लड़खड़ाहट होना। गंभीर सिरदर्द या बेहोश होना। सवाल- कौन सी चीजें जम्हाई को ट्रिगर कर सकती हैं? जवाब- थकान, भूख, तनाव और किसी को जम्हाई लेते देखना, ये सभी जम्हाई को ट्रिगर करते हैं। सवाल- जम्हाई लेते वक्त कभी-कभी आंखों से पानी क्यों निकलता है? जवाब- जम्हाई के दौरान चेहरे की मांसपेशियां जोर से खिंचती हैं। जब ये मांसपेशियां खिंचती हैं तो आंखों के पास मौजूद आंसू की ग्रंथियों पर दबाव पड़ता है। इस दबाव के कारण ग्रंथियों से आंसू निकलने लगते हैं। सवाल- अगर जम्हाई ज्यादा आती है तो इससे राहत पाने के लिए क्या करना चाहिए? जवाब- अगर बिना किसी खास कारण के बहुत ज्यादा जम्हाई आती है तो कुछ आसान उपायों से इसे कम कर सकते हैं।सवाल- एक दिन में कितनी बार जम्हाई लेना सामान्य है? जवाब- आमतौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति दिन में 5 से 10 बार जम्हाई लेता है, जिसे सामान्य माना जाता है। हालांकि यह संख्या हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकती है। यह समय, थकान, नींद की पर निर्भर है। अगर दिन में 15 मिनट के अंदर 3 से ज्यादा बार जम्हाई आती है या यह इतनी ज्यादा है कि रोजमर्रा के काम में रुकावट आने लगे तो इसे असामान्य माना जा सकता है। सवाल- बहुत ज्यादा उबासी का इलाज कैसे किया जाता है? जवाब- डॉक्टर इसके पीछे के असल कारण का पता लगाकर सही इलाज की सलाह देते हैं। अगर जम्हाई किसी अंदरूनी बीमारी के कारण आ रही है तो डॉक्टर उस बीमारी का इलाज करेंगे। अगर जम्हाई किसी दवा के साइड इफेक्ट के कारण है तो डॉक्टर उस दवा की खुराक कम कर सकते हैं या कोई दूसरी दवा लिख सकते हैं।

अंकुरित आलू में टॉक्सिक कंपाउंड,खाने से हो सकती हैं 6 हेल्थ प्रॉब्लम्स, जानें आलू को स्टोर करने का सही तरीका

नयी दिल्ली। यूनाइटेड नेशन के फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन के मुताबिक, आलू दुनियाभर में सबसे ज्यादा खाई जाने वाली सब्जियों में से एक है। ये कई सारे जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर होता है। लेकिन अगर आलू अंकुरित हो जाते हैं तो इसे खाने से कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। अंकुरित आलू वे होते हैं, जिनमें अंकुर यानी 'आंखें' उगने लगती हैं। ये अक्सर तब होता है, जब उन्हें लंबे समय तक स्टोर किया जाता है। अक्सर वे क्लोरोफिल के कारण हरे रंग के हो जाते हैं, जो प्रकाश के संपर्क में आने पर बनता है। नेशनल कैपिटल पॉइजन सेंटर मुताबिक, अंकुरित आलू सेहत के लिए सही नहीं होते हैं। इसमें सोलेनाइन और चाकोनाइन जैसे कुछ टॉक्सिक तत्व होते हैं। इसकी टॉक्सिसिटी से कई हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। जानेंगे कि- सवाल जवाब के माध्यम से एक्सपर्टः डॉ. पूनम तिवारी, सीनियर डाइटीशियन, डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ जी से साथ ही साथ क्या अंकुरित आलू खाने से किस तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं? आलू को स्टोर करने का सही तरीका क्या है? सवाल- किन वजहों से आलू जल्दी अंकुरित होते हैं? जवाब- आलू जमीन के नीचे उगने वाली सब्जी है, जिसमें नमी और स्टार्च की मात्रा ज्यादा होती है। यही कारण है कि यह जल्दी अंकुरित हो जाता है। गर्म और नमी वाली जगह पर रखे आलू तेजी से अंकुरित होने लगते हैं। इसी तरह जब आलू पर रोशनी पड़ती है तो उनमें क्लोरोफिल बनने लगता है और अंकुर निकल आते हैं। अगर आलू को ऐसी जगह रखा जाए, जहां हवा न मिले तो वे जल्दी पसीज जाते हैं और अंकुरण शुरू हो जाता है। लंबे समय तक रखने पर आलू अपनी नेचुरल प्रोसिजर से भी अंकुरित होने लगते हैं।

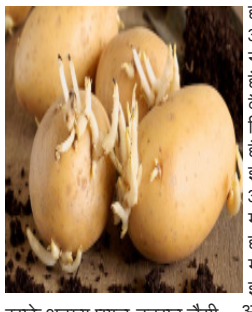

इसके अलावा प्याज-लहसुन जैसी सब्जियां इथिलीन गैस छोड़ती हैं, जो आलू के अंकुरण को तेज करती हैं। कुल मिलाकर यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। ये अंकुर वास्तव में नए आलू के पौधे होते हैं। सवाल- क्या अंकुरित आलू में न्यूट्रिशन की कमी हो जाती है? जवाब- जब आलू अंकुरित होने शुरू होते हैं तो यह नए अंकुरों के ग्रोथ के लिए अपने न्यूट्रिएंट्स का इस्तेमाल करते हैं। इससे आलू की न्यूट्रिशनल वैल्यू में कमी आ सकती है। आलू विटामिन सी का एक अच्छा स्रोत है, लेकिन अंकुरित होने पर इसकी मात्रा कम हो जाती है। अंकुरण की प्रक्रिया में आलू में मौजूद स्टार्च शुगर में परिवर्तित हो जाता है, जिससे उसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स बढ़ जाता है। इसके अलावा अंकुरित आलू में अन्य विटामिन और मिनरल्स जैसे पोटेशियम, विटामिन बी, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स की मात्रा भी कम हो जाती है। सवाल- अंकुरित आलू खाने से कौन सी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं? जवाब- अंकुरित आलू में सोलेनाइन और चाकोनाइन नामक टॉक्सिक ग्लाइकोएल्कलॉइड होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं।

इसकी ज्यादा मात्रा से मतली, उल्टी, दस्त और पेट में ऐंठन हो सकती है। इसलिए अंकुरित आलू खाने से बचना चाहिए। अंकुरित आलू खाने से फूड पॉइजनिंग का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा कुछ और भी समस्याएं हो सकती हैं।सवाल- अंकुरित आलू खाना किन लोगों के लिए ज्यादा नुकसानदायक हो सकता है? जवाब- सीनियर डाइटीशियन डॉ. पूनम तिवारी बताती हैं कि ताजे आलू की तुलना में अंकुरित आलू ब्लड शुगर लेवल को तेजी से बढ़ा देता है। यही कारण है कि डायबिटिक मरीजों को इसे बिल्कुल भी नहीं खाना चाहिए। इसके अलावा कुछ और लोगों के लिए भी अंकुरित आलू स्वास्थ्य के लिहाज से खतरनाक साबित हो सकते हैं। जैसेकि- गर्भवती महिलाएं, छोटे बच्चे और बुजुर्ग। पाचन संबंधी समस्याओं से जूझ रहे लोग। न्यूरोलॉजिकल प्रॉब्लम वाले मरीज। कमजोर इम्यूनिटी वाले व्यक्ति। एलर्जी से पीड़ित लोग। इन सभी लोगों में अंकुरित आलू से होने वाले सोलनाइन टॉक्सिसिटी का खतरा ज्यादा होता है, जो पेट दर्द, उल्टी, सिरदर्द और चक्कर जैसी गंभीर समस्याएं पैदा कर सकता है। सवाल- आलू को कैसे स्टोर करें कि वह जल्दी अंकुरित न हो? जवाब- आलू को अंकुरित होने से बचाने के लिए उसे ठंडी, अंधेरी और हवादार जगह पर 45-50° (7-10°f) के बीच स्टोर करें। इन्हें कभी भी फ्रिज में स्टोर न करें क्योंकि ठंडक स्टार्च को शुगर में बदल देती है और आलू का स्वाद मीठा हो जाता है।

आलू को प्याज या नमी वाली सब्जियों के पास न रखें। इन्हें जालीदार थैले या पेपर बैग में रखें ताकि हवा आती-जाती रहे। आलू को ज्यादा समय तक न रखें, समय-समय पर खराब या अंकुरित आलू को अलग करते रहें। इसके अलावा कुछ और बातों का ख्याल रखें।सवाल- अंकुरित आलू को फेंकने की बजाय और किस काम में लाया जा सकता है? जवाब- खाने या फेंकने की बजाय अंकुरित आलू का उपयोग कई अन्य कामों में किया जा सकता है।

जैसेकि- अंकुरित आलू को छोटे टुकड़ों में काटकर कंपोस्ट बिन में डाल दें। सड़ने के बाद यह मिट्टी में पोषक तत्व बढ़ाकर पौधों की ग्रोथ के लिए फायदेमंद साबित होंगे। अंकुरित आलू को पीसकर उसका रस पौधों पर छिड़कें। यह एक नेचुरल पेस्टिसाइड की तरह काम करता है और छोटे कीड़ों को दूर रखने में मदद करता है। आलू का रस स्किन पर लगाने से टैनिंग और डार्क स्पॉट्स कम करने में मदद मिलती है। हालांकि इसे लगाने से पहले पैच टेस्ट करना जरूरी है।

अंकुरित आलू को गमले या खेत की मिट्टी में लगा सकते हैं। इससे नए आलू के पौधे उग जाते हैं।

बदलती दुनिया में हमारी जगह कहां है?

1945 के बाद जो वैश्विक व्यवस्था बनी थी, वह अब बिखरने के कगार पर है। उस व्यवस्था के दो मुख्य पहलू थे- सुरक्षा और अर्थव्यवस्था। सुरक्षा उस समय की वैश्विक व्यवस्था की बुनियाद

थी। सिर्फ तीन दशकों में दो भयानक विश्वयुद्ध होने के बाद युद्ध को रोकना अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की सबसे बड़ी प्राथमिकता बन गया था। इसका मतलब था कि 'महाशक्तियों' के बीच युद्ध न हो। भारत, पाकिस्तान, चीन, कंबोडिया, वियतनाम, मलेशिया, इंडोनेशिया, उत्तर और दक्षिण कोरिया जैसे देश आपस में या कभी-कभी बड़ी शक्तियों की ओर से लड़ सकते थे, लेकिन यूरोप में या सोवियत संघ और अमेरिका के बीच, या जापान और अमेरिका के बीच युद्ध नहीं होना चाहिए। इस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, नाटो (नॉर्थ एटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन) और पूर्वी एशिया में अमेरिका के रणनीतिक वादे अहम थे। उस समय एक ग्लोबल इकोनॉमी सिस्टम भी बना, लेकिन वह सुरक्षा व्यवस्था के मुकाबले कम महत्वपूर्ण था। इसके मुख्य आधार थे- जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ एंड ट्रेड (गैट), जो बाद में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) बन गया; डॉलर, जो अंतरराष्ट्रीय रिजर्व मुद्रा बन गया और मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के जरिए आर्थिक संतुलन को संभालना। जबकि 1914 से 1945 के बीच अर्थव्यवस्थाएं भारी टैरिफ पर आधारित थीं और मुक्त व्यापार से बचा जाता था। उस समय कोई अंतरराष्ट्रीय रिजर्व मुद्रा भी नहीं थी। अमेरिका सुरक्षा और आर्थिक- दोनों व्यवस्थाओं का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था। उसकी मौजूदा सरकार की बदलती नीतियों से साफ है कि वह क्या करना चाहती है। ट्रम्प का अमेरिका 'नाटो' को निशाना बनाकर 1945 के बाद बनी सुरक्षा व्यवस्था को कमजोर करना चाहता है और दुनिया भर में टैरिफ लगाकर पुरानी आर्थिक व्यवस्था को भी बदलना चाहता है।टैरिफ का इस्तेमाल अब सिर्फ आर्थिक नीति के रूप में ही नहीं, बल्कि भू-राजनीतिक हथियार के रूप में भी हो रहा है। ट्रम्प का कहना है कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद इन व्यवस्थाओं से अमेरिका को जो भी फायदा हुआ हो, आज ये अमेरिकी हितों को नुकसान पहुंचा रही हैं। अगर अमेरिका को नुकसान हो रहा है तो वह क्यों झेले? उनका 'मागा' समर्थक वर्ग भी इससे सहमत है। मुद्दा यह नहीं है कि यह सही है या गलत। कोई भी तर्क दे सकता है कि अमेरिकी नीति में यह बदलाव गलत है, लेकिन जब तक ट्रम्प सत्ता में हैं, इन नई भू-राजनीतिक और आर्थिक सच्चाइयों को नजरअंदाज करना जोखिम भरा होगा। इसके अलावा, जब गठबंधन आधारित सुरक्षा व्यवस्था कमजोर होती है, तब 'शक्ति संतुलन' का सिद्धांत ज्यादा अहम हो जाता है। 1945 से पहले ताकतवर देश इसी सिद्धांत पर दुनिया चलाते थे। आज के बदलाव को प्राचीन यूनानी इतिहासकार थ्यूसीडाइडस के शब्दों में समझा जा सकता है : 'ताकतवर वही करते हैं जो वे अपनी ताकत से कर सकते हैं और कमजोर वही मानते हैं जो उन्हें मानना पड़ता है।' ट्रम्प का अमेरिका इसी सोच में विश्वास करता है। भारत कमजोर नहीं है, लेकिन अमेरिका के मुकाबले उसकी स्थिति क्या है? अमेरिका की जीडीपी 30 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा है, जबकि भारत की करीब 4 ट्रिलियन है। अमेरिका में प्रति व्यक्ति आय 85,000 डॉलर है, जबकि भारत में यह 3,000 डॉलर से भी कम है। कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी के शब्दों में, भारत को ज्यादा से ज्यादा एक 'मिडिल पावर' कहा जा सकता है। भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है, यह सही है पर यह भ्रामक भी हो सकता है। अमेरिका की अर्थव्यवस्था भारत से करीब आठ गुना बड़ी है और प्रति व्यक्ति आय के मामले में 28 गुना ज्यादा है। सिर्फ 3,000 डॉलर प्रति व्यक्ति आय वाला देश 'महाशक्ति' नहीं बन सकता। यही वह जगह है, जहां भारत और चीन के बीच बड़ा फर्क दिखता है। 1990 के दशक तक चीन भी भारत जितना गरीब था, लेकिन आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी सौदेबाजी की ताकत भारत से कहीं ज्यादा है। वजह साफ है- उसकी जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय दोनों भारत से लगभग पांच गुना ज्यादा हैं। भारत के आधिकारिक दावों से लगता है कि उसकी सौदेबाजी की ताकत मजबूत है, लेकिन उसके पास ज्यादा विकल्प नहीं हैं। अगर भारत अमेरिका से दूरी बनाता है, तो ताकत का यह बड़ा अंतर उसके फैसलों की सीमाएं तय करेगा, लेकिन निकट भविष्य में अमेरिका से दूरी बनाना संभव नहीं है, क्योंकि अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। भारत का 20 फीसदी निर्यात अमेरिका जाता है। भारत की सॉफ्टवेयर क्रांति भी काफी हद तक अमेरिकी बाजार पर टिकी रही है। एक और पहलू है, जिस पर कम ध्यान दिया जाता है। यह 'चाइना प्लस वन' रणनीति से जुड़ा है, यानी चीन के अलावा किसी और देश में निवेश करना। चीन और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव के कारण कई कंपनियां चीन के बाहर निवेश पर विचार कर रही हैं, लेकिन वे बड़ी संख्या में भारत आएंगी, यह साफ नहीं है। अगर अमेरिका निर्यात पर भारी टैरिफ लगाता है, तो 'मेड इन इंडिया' या 'असेंबल्ड इन इंडिया' उत्पादों के लिए अमेरिकी बाजार में जगह बनाना मुश्किल होगा। एक सवाल उठता है- क्या आज की सीमाओं को भविष्य के मौके में बदला जा सकता है? अमेरिका, यूरोपीय संघ और ब्रिटेन की कुल जीडीपी दुनिया की कुल जीडीपी की 43-44 फीसदी है। भारत के इन तीनों के साथ व्यापार समझौते हो चुके हैं। कनाडा के साथ भी समझौता दूर नहीं है। इसलिए आर्थिक ताकत बढ़ाने का मौका बन सकता है। अगर श्रम आधारित सेक्टरों को सही समर्थन मिले, तो क्या भारत इस मौके का उपयोग रोजगार बढ़ाने वाली मैन्युफैक्चरिंग के लिए कर सकता है? व्यापार समझौते से अगर भारत को अमेरिकी बाजार में पहुंच मिलती है, तो उसे साथ ही अपनी अर्थव्यवस्था को विविध बनाते रहने की कोशिश भी करनी होगी। व्यापार समझौतों को आमतौर पर आर्थिक फायदे के आधार पर परखा जाता है, लेकिन यह सिर्फ आर्थिक मामला नहीं होता, खासकर बदलते हुए वैश्विक हालात में। आज कोई भी व्यापार समझौता राजनीति से जुड़े मुद्दे भी सामने लाता है। इस मौके का उपयोग हम मैन्युफैक्चरिंग बढ़ाने में करें क्या आज की सीमाओं को भविष्य के मौके में बदला जा सकता है? अमेरिका, ईयू और ब्रिटेन की कुल जीडीपी दुनिया की कुल जीडीपी की 43-44फीसदी है। भारत के इन तीनों के साथ व्यापार समझौते हो चुके हैं। इसलिए मैन्युफैक्चरिंग से रोजगार बढ़ाने का मौका बन सकता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं) आशुतोष वार्ष्णेय

मौसम का विरोधाभासी व्यवहार चिंताजनक संकेत देता है

आज दुनिया में मौसम जिस तरह से चकमा दे रहा है और पारिस्थितिकी-तंत्र जैसे रूप बदल

रहा है, उसे किस तरह से लिया जाए? एक तरफ तो ये वर्ष दुनिया के लिए गर्म रहा, वहीं अपने देश में सब कुछ सामान्य दिखाई दिया। इतना ही नहीं, मौसम के पैटर्न ने पारिस्थितिकी समझ को भी चकरा दिया। इस वर्ष कुछ देशों में गर्मी ने फिर वही हालात बनाए रखे, जैसे कि गत वर्षों में थे। और अन्य जगह सब कुछ सामान्य से नीचे स्तर का था। इसके पीछे कई कारण रहे हैं, विशेषकर उत्तरी गोलार्ध में पश्चिम-मध्य एशिया, पूर्वोत्तर रूस और पश्चिमी अंटार्कटिका में अत्यधिक गर्मी दर्ज की गई, जबकि हडसन खाड़ी से लेकर उत्तरी ऑस्ट्रेलिया और पूर्वी अंटार्कटिका तक अपेक्षाकृत ठंडक बनी रही। भारत भी इन असमान व्यवहार वाले क्षेत्रों में शामिल रहा। इस तरह का मौसम-व्यवहार कई बातों की ओर इशारा करता है। अब हमारे पास देश से जुड़ी भी कई असामान्य खबरें हैं। भारत के कई हिस्सों में मई के दौरान सामान्य से 20-40 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई और तापमान 4 से 6 डिग्री तक गिर गया।वे शहर जो आमतौर पर अधिक तापमान के लिए जाने जाते हैं- जैसे दिल्ली, लखनऊ, पटना- वहां इस बार की गर्मियों में तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहा। दुनिया में महत्वपूर्ण खबर यह रही कि ग्रीनलैंड और आइसलैंड में बर्फ पिघलने की घटनाएं सामने आईं।

वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन समूह के वैज्ञानिकों ने बताया कि वहां तापमान 3 डिग्री तक बढ़ गया, जिससे भारी मात्रा में बर्फ पिघली। इसका कारण मानवीय गतिविधियां तो हैं ही, यह भी देखा गया कि कई अन्य क्षेत्रों में तापमान गत वर्षों की प्रवृत्ति जैसा ही रहा। मई का महीना दुनिया भर में अब तक का सबसे गर्म महीना पाया गया। क्लाइमेट चेंज सर्विस की रिपोर्ट में बताया गया कि मई में वैश्विक सतह तापमान 1850-1900 के औद्योगिक युग की तुलना में 1.4 डिग्री अधिक दर्ज किया गया। परंतु, भारत, अलास्का, दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी एशिया जैसे क्षेत्रों में मई का तापमान सामान्य से नीचे रहा था। इस तरह का विरोधाभासी मौसम व्यवहार यह स्पष्ट करता है कि क्लाइमेट के सिस्टम में बड़ी गड़बड़ हो चुकी है। 2025 में सतह का औसत तापमान 15.79 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो 1991-2020 की तुलना में 0.5 डिग्री अधिक था। यह 2020-2024 की सबसे गर्म मई से केवल 0.12 डिग्री कम था। इससे स्पष्ट है कि वैश्विक तापमान में मामूली गिरावट तो है, परंतु मौसम का असामान्य व्यवहार बना हुआ है। यह वृद्धि मुख्यतः जीवाश्म ईंधनों के जलने से हुए उत्सर्जन का परिणाम है। रिपोर्ट में बताया गया कि पिछले 22 में से 21 महीने ऐसे रहे हैं, जिनमें वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहा। इससे पहले मार्च, अप्रैल और फरवरी भी इतिहास के सबसे गर्म महीनों में शामिल रहे। भारत में फरवरी 2025, पिछले 125 वर्षों में सबसे गर्म रहा। परंतु मई और जून के महीने ला-नीना प्रभाव के कारण अपेक्षाकृत शीतल रहे। इस दौरान भारत और दुनिया भर में जनवरी का महीना सबसे गर्म साबित हुआ। इन सभी घटनाओं को देखकर चौंकना स्वाभाविक है। 2025 में भारत का मौसम अपेक्षाकृत कम गर्म रहा। देश ने इस बार कोई गंभीर लू जैसी स्थिति नहीं झेली। अधिकतम तापमान लगभग 35 डिग्री के आसपास रहा। इसका एक प्रमुख कारण यह रहा कि समय-समय पर मौसम ने करवट बदली और बारिश हुई। इस वर्ष पश्चिमी विक्षोभ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन सबसे असामान्य बात यह रही कि इस बार मानसून समय से पहले आ गया। सामान्यतः मानसून जुलाई तक सक्रिय होता है, लेकिन इस बार समुद्री सतह के तापमान के बढ़ने के कारण यह जल्दी सक्रिय हो गया। समुद्र का लगातार ऊष्ण रहना भी अब नियमित हो चुका है। इसका मतलब है कि अब साल भर किसी न किसी रूप में बारिश देखने को मिल सकती है। जहां पहले कभी बारिश नहीं होती थी, जैसे राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में भी वर्षा संभावित है, और जहां अत्यधिक वर्षा होती थी- जैसे पूर्वोत्तर भारत, वहां विपरीत प्रभाव दिख सकता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं)

गणितीय ज्ञान की कमी के कारण हम पर कौन हावी होगा?

क्या आपको याद है जब पूरी प्राथमिक कक्षा एक सुर में 'एक एकम एक, एक दूनी दो' से लेकर '16 एकम

16, 16 दूनी 32' तक दोहराती थी। वास्तव में उस वक्त वो 1 से 16 तक के पहाड़े याद कर रही होती थी। जब तक हम 1 से 16 तक के पहाड़े याद करने में पारंगत नहीं हो जाते थे, उन दिनों में हमारे गणित के टीचर ब्लैक बोर्ड पर कुछ भी नहीं लिखते थे। और इसका नतीजा आज हम देख रहे हैं। उस बुनियाद के बल पर ही हम यह गणना तत्काल कर लेते हैं कि राशन वाले को कितने पैसे देने हैं और यदि किसी वस्तु पर 23 फीसदी छूट है तो हम कितनी बचत कर लेंगे। फिर कैलकुलेटर आए। धीरे-धीरे बच्चे हमसे सवाल करने लगे कि पहाड़े क्यों पढ़ें? जोर-जोर से पहाड़ों का दोहराना खत्म हो गया। फिर हाल ही चैटबॉट आया, जो यदि आप अपनी मातृभाषा में भी कुछ बड़बड़ाओ, तो भी आपकी पसंद की भाषा में वाक्य बना देगा। अब वो दिन दूर नहीं, जब अगली पीढ़ी सवाल करेगी कि वे भाषा भी क्यों पढ़ें। अब सीधे जुलाई 2025 पर आते हैं। ये हैरतअंगेज आंकड़ा है कि नवीं कक्षा के 63इ विद्यार्थी अंकों का सामान्य पैटर्न पहचानने में भी विफल रहे हैं। उन्हें भिन्न व पूर्णांक जैसे सामान्य अंकों की समझ नहीं है। भारत में छठी कक्षा के स्कूली छात्र पुस्तकों के मुख्य पाठों को ही नहीं समझ पाते। पिछले साल दिसंबर में शिक्षा मंत्रालय की ओर से कराए 'परख' राष्ट्रीय सर्वे में ये निष्कर्ष निकला है, जिसे पूर्व में राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण कहते थे। सर्वे में 36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 781 जिलों में स्थित 74,229 स्कूलों के तीसरी, छठी और नवीं कक्षा के 21,15,022 विद्यार्थियों का आकलन किया गया। इसमें पाया गया कि छठी कक्षा के 54फीसदी विद्यार्थी पूर्णांकों की तुलना करने और बड़ी संख्याओं को पढ़ने में असफल रहे। यह देश की शिक्षा प्रणाली में सीखने की कमजोरी को दर्शाता है। सर्वे में कहा गया कि छात्रों को 7 के गुणज, 3 की होती है। तो फिर हमारी खरीद के भुगतान, वेतन, ओवरटाइम की गणना करते वक्त हमारे जीवन पर कौन हावी होने जा रहा है? बेशक, एआई? यह कहकर इसे खारिज मत कर देना कि एआई को हमारे रोजमर्रा के जीवन में दखल देने में अभी बहुत समय लगेगा। याद करो कि कैसे 1835 में घोड़ा गाड़ी मालिकों ने 1830 में यूके में लिवरपूल से मैनचेस्टर तक शुरू हुई दुनिया की पहली रेल के प्रभाव को खारिज किया था। उन्होंने कहा कि रेल यातायात कभी भी उनके व्यवसाय पर भारी नहीं पड़ेगा। और रेल ने ना सिर्फ उनके व्यवसाय को खत्म कर दिया, बल्कि कुछ वर्षों में ही पूरे विश्व में औद्योगिक क्रांति को भी गति दी। 'सेपियन्स' के लेखक युवाल नोआ हरारी से जब मीडिया ने पूछा कि क्या एआई के युग में मानव की क्षमता कम हो जाएगी? उन्होंने जवाब दिया कि 'मुझे लगता है, जिन क्षेत्रों में हम सबसे पहले बड़े बदलाव देखेंगे, उनमें वि?त्तीय प्रणाली शामिल है।' क्योंकि वित्त शुद्ध रूप से एक सूचना संबंधी क्षेत्र है। सेल्फ ड्राइविंग वाहन आधुनिक जीवन पर अभी बहुत असर नहीं छोड़ पाए हैं, क्योंकि वे अभी पैदल चलने वालों की आदतें (बुरी आदतें) और गड्ढों के बारे में सीख रहे हैं। पर वित्त के मामले में ये 'इंफॉर्मेशन इन' और 'इंफॉर्मेशन आउट' का मामला ही है। इसीलिए इस क्षेत्र पर नियंत्रण कर लेना एआई के लिए बहुत आसान होगा। हरारी का पूर्वानुमान है कि एक बार एआई वित्त क्षेत्र में हावी हुआ तो यह उन उपकरणों में निवेश शुरू कर देगा, गणितीय जटिलताओं के कारण मानव मस्तिष्क जिनसे निपटने में अक्षम है। अब ऊपर बताए पहाड़ों को देखें, जिन्हें दोहराना बंद करने के कारण हमारे बच्चे अंकों के साथ मजबूत रिश्ता नहीं बना पाए। मोबाइल ने नंबर्स याद रखने की हमारी मेमोरी छीन ली। कोई भी ये मानने से इनकार नहीं कर सकता कि एआई गणना कर सकने वाला एक एजेंट तो है, लेकिन ऐसा औजार नहीं जिसका नियंत्रण हमारे हाथों में हो।

उपचार में दवाओं के बजाय हमदर्दी तेजी से काम करती है

मुझे याद तक नहीं कि कितनी बार मैं झुकी-सी कमर और थकान

के साथ नागपुर के हमारे पारिवारिक चिकित्सक स्वर्गीय डॉ. हरिदास की डिस्पेंसरी में गया था। लेकिन मुझे यह याद है कि इसमें से 90 फीसदी दफा मैं उसी डिस्पेंसरी से महज 20 मिनट में सीधी कमर के साथ मुस्कराता और कूदता हुआ बाहर निकला। सबसे पहले डॉक्टर मेरे सिर पर हाथ फेरते। फिर मुझसे जीभ बाहर निकालने के लिए कहते और टॉर्च से इसके भीतर ऐसे देखते, जैसे मैं वहां कुछ छिपा रहा हूं। फिर वह अपने स्टेथोस्कोप से मेरे दिल और फेफड़ों की जांच करते। वह अपने साफ सुथरे मैनिक्योर किए हाथों से मेरी कलाई पकड़ते और उस समय में मुझसे कुछ ऐसी बातें करते रहते, जिनका मेरी बीमारी से कोई लेना-देना नहीं होता था। वह पूछते कि मैंने आज क्या खाया, कौन-सा विषय मेरे लिए बहुत कठिन है या सरल है। कौन-सा शिक्षक मुझे सबसे ज्यादा पसंद है इत्यादि। अंततः वो मुझे एक गोली देकर इसे अपने सामने ही खाने के लिए कहते, इस भरोसे के साथ कि 'ये गोली तुम्हारे भीतर एक जादू करेगी। तुम यहां से 10 मिनट में ही नाचते-कूदते चले जाओगे।' मैं कभी महसूस ही नहीं कर पाया कि मेरी बीमारी ठीक होने के जादू का कारण उनकी दी हुई गोली नहीं थी, बल्कि उनके जादुई शब्द और वो धैर्य था, जो वह मरीज की बात सुनने में देते थे। यह बिल्कुल वही बात है, जो राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस सोमवार एम्स गोरखपुर के पहले दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि 'एक दयालु डॉक्टर सिर्फ दवाओं से नहीं, बल्कि अपने व्यवहार से भी उपचार करता है। सहानुभूति भरी देखभाल मरीज की रिकवरी को तेज करती है। एक डॉक्टर का धैर्य और समर्पण समाज के लिए एक आदर्श स्थापित करता है।' उन्होंने चिकित्सा को महज एक पेशा नहीं, बल्कि मानवता की सच्ची सेवा करार दिया। राष्ट्रपति ने समारोह में ग्रेजुएशन कर रहे विद्यार्थियों को डिग्री और मेडल प्रदान किए और इस ऐतिहासिक आयोजन का हिस्सा बनने पर प्रसन्नता व्यक्त की। जैसे राष्ट्रपति ने जिक्र किया, वैसे सैकड़ों चिकित्सक देश में हैं और उनमें से एक स्वर्गीय डॉ. वी बालासुब्रमणियम मुझे अच्छी तरह से याद हैं, जो '20 रुपए वाला डॉक्टर' के नाम से मशहूर थे। एक ऐसा व्यक्ति जो गरीबों के लिए भगवान था। नवंबर 2016 में तमिलनाडु के कोयंबटूर में उनके घर और डिस्पेंसरी की गलियों में लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा था, जो अपने प्यारे '20 रुपए वाले डॉक्टर' को श्रद्धांजलि देने आए थे। उन्होंने कभी भी अपने मरीजों से उपचार के लिए 20 रुपए से अधिक फीस नहीं ली। पहले उन्होंने अपने मरीजों को महज 2 रुपए में परामर्श देना शुरू किया और फिर भी वह मरीज से महज 10 रुपए ही लेते थे। देश में आज भी उनके जैसे कई सारे चिकित्सक हैं। डॉ. एस. एम. जियाउर्रहमान जब दिल्ली के एक बेहद प्रतिष्ठित निजी अस्पताल में कार्यरत थे, तो उनके पास बिहार के खगड़िया से एक बेहद गरीब मरीज आया। जियाउर्रहमान स्वयं भी वहीं के रहने वाले थे।

मरीज अपने उपचार के लिए करीब 1200 किलोमीटर की यात्रा कर उनके पास पहुंचा। इसी के कारण वह दिल्ली की अपनी मोटी तनख्वाह वाली नौकरी छोड़ कर अपने गृह नगर में सिर्फ 50 रुपए में मरीजों का इलाज करने के लिए प्रेरित हुए। पिछले 35 वर्षों से बिहार के बरबीघा गांव के डॉ. रामानंद सिंह, पटना के डॉ.एजाज अली, आंध्र प्रदेश के कडप्पा जिले की डॉ. नूरी परवीन, कर्नाटक के डॉ. शंकरे गौड़ा इतनी कम फीस लेते हैं, जिसमें सड़क किनारे की गुमठी से एक कप चाय भी नहीं खरीदी जा सकती। लेकिन जब हम देश के सरकारी अस्पतालों के गलियारों में मदद के लिए गूंजती मरीजों की करुण पुकार सुनते हैं तो ये डॉक्टर चिकित्सकीय उपचार मुहैया कराते ?हैं। फंडा यह है कि शायद ये चिकित्सक जानते हैं कि एक प्रगतिशील राष्ट्र के लिए स्वस्थ आबादी कितनी जरूरी है। और इसीलिए वे हमदर्दी से इतने भरे हुए हैं।

'हिट एंड रन' मामलों में और कितनी जानें गंवाएंगे हम?

'यह कोई न्यूज स्टोरी नहीं, एक आंदोलन बनना चाहिए', इन्ना माकन ने अत्यंत पीड़ा के साथ यह शब्द मुझसे कहे। मैं सिर झुकाकर सहमति ही जता पाई। जब वे पीड़ा, गुस्से और अकेलेपन के चलते रो रही थीं, तो मैं भी बमुश्किल ही अपने आंसू रोक पाई। दिल्ली में ब्राइडल मेकअप स्टूडियो चलाने वाली इन्ना को कुछ दिन पहले तक हममें से ज्यादातर लोग नहीं जानते थे। आज उनकी त्रासदी का बोझ और उनके साहस की शक्ति हमारे सिस्टम को आईना दिखा रही है। इन्ना माकन के 23 साल के बेटे साहिल धनेशरा की हमारी राष्ट्रीय राजधानी की सड़कों पर हत्या कर दी गई। वह इसलिए मारा गया, क्योंकि उस दिन एक बिगड़ैल किशोर अपनी बहन को बगल में बिठाकर स्कॉर्पियो में घुमाने निकला था। दोनों तेज स्पीड में गाड़ी चलाते हुए रील्स बना रहे थे। स्कॉर्पियो ने एक मोटरसाइकिल को टक्कर मारी और साहिल की मौके पर ही मौत हो गई। सामने आए वीडियो में साफ दिख रहा है कि कैसे वह गाड़ी तेज रफ्तार पर दौड़ रही थी। यह खुलासा भी हुआ है कि अतीत में उसी गाड़ी के 13 चालान भी हुए हैं, जिनमें 9 तेज रफ्तार के लिए हैं। आरोपी नाबालिग है और उसके पास लाइसेंस नहीं था। उसने पुलिस से झूठ बोला कि उसकी उम्र 19 साल है, लेकिन दस्तावेजों से पता चला कि 16 का ही है।लेकिन किशोर न्याय बोर्ड ने उसे बोर्ड परीक्षाएं देने के लिए जमानत दे दी। हमारा सिस्टम कितना लचर है कि एक अमीर आदमी के बेटे का अहंकार भरा व्यवहार किसी दूसरे युवा के सपनों को चकनाचूर कर देता है। कानून के मुताबिक हम आरोपी या उसके पैरेंट्स का नाम नहीं ले सकते, क्योंकि नाबालिग अपराधी की पहचान सुरक्षित रखी जाती है। हम उस बहन का नाम भी नहीं ले सकते, जो कार में बैठकर सड़क पर खतरनाक हरकतें कर रहे भाई का वीडियो बना रही थी। कानून के अनुसार आरोपी को तो फिर से अपनी जिंदगी संवारने का मौका मिल सकता है, लेकिन साहिल का जीवन तो हमेशा के लिए खत्म हो गया। इन्ना माकन सिंगल मदर थीं और घर चलाने के लिए कड़ी मेहनत करती थीं, इसलिए साहिल ने ठाना था कि वह आर्थिक रूप से सक्षम होकर मां की मदद करेगा। उसके सपने बड़े थे। अपने कमरे की छत पर उसने लिखा था- '2025 विल बी द बेस्ट ईयर ऑफ माय लाइफ।' हाथ से बने एक और पोस्टर पर लिखा था- 'दे वांट टु फ्लाय फर्स्ट क्लास, आई वांट टु ओन द प्लेन।' वह विदेश में पढ़ाई करने पर ध्यान दे रहा था। उसकी मौत के बाद 14 फरवरी को मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी से उसका एक्सेप्टेंस लेटर भी आया था। इन्ना ने कहा कि बेटे की मौत के 14 दिनों बाद तक उनके साथ खड़ा होने के लिए कोई नहीं आया। जब उन्होंने एक वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाला तो उसके वायरल होने के बाद सिस्टम हरकत में आया। उन्होंने जोर देकर कहा कि उनके बेटे की मौत को दुर्घटना न कहा जाए। और वे सही हैं। आरोपी के पिता ने माफी मांगी है, लेकिन इससे साहिल का जीवन तो वापस नहीं आएगा। अमीरों और उनके विशेषाधिकार प्राप्त बच्चों को दंड से मुक्ति के नियम को समाप्त किया जाना चाहिए। अगर तत्काल सख्त मिसाल पेश नहीं की गई तो कानून से बच निकलने का यह शगल बन जाएगा। मुंबई में इसी हफ्ते 33 साल के व्यवसायी ध्रुमिल पटेल की तेज रफ्तार एसयूवी की टक्कर से मौत हो गई और उसे भी एक किशोर ही चला रहा था। इस मामले में भी उसे किशोर न्याय बोर्ड ने जमानत और परीक्षाएं देने की अनुमति दे दी है। संभव है कि किशोरों संबंधी कानूनों के पीछे इरादे अच्छे रहे हों। लेकिन पैसे और ताकत के दुरुपयोग तले दबे सिस्टम में अब ये कानून अमीरों और लापरवाह लोगों के अहंकारी रवैये की रक्षा करने लगे हैं। संभव है कि किशोरों संबंधी कानूनों के पीछे इरादे अच्छे रहे हों। लेकिन पैसे और ताकत के दुरुपयोग तले दबे सिस्टम में अब ये कानून अमीरों और लापरवाह लोगों के अहंकारी रवैये की रक्षा करने लगे हैं। इनमें सुधार की जरूरत है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं)बरखा दत्त

पुकार! किसी के पास कान हो तो सुने!

हर तरफ बादल हैं। बारिश है। बाढ़ भी। पहाड़ों पर तबाही ज्यादा है। वे सरक रहे हैं। दरक रहे हैं। मैदानों में हमेशा की तरह कहीं भारी बारिश। कहीं बूंदा-बांदी। लेकिन बिहार जहां इन? दिनों अमूमन बाढ़ होती है, फिलहाल सूखा है। गर्मी है। चुनावी गर्मी। यहां चुनाव होने हैं अक्टूबर-नवम्बर में, लेकिन चुनावी गर्मी अभी से सिर चढ़कर बोल रही है। कभी विरोधी दलों के लोग, लालू यादव को चारा खाते दिखा रहे हैं। कहीं तेजस्वी और लालू, नीतीश कुमार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तंज कस रहे हैं। सवाल पर सवाल। जवाब पर जवाब। बाकायदा एक-दूसरे के खिलाफ चौराहों पर पोस्टर चिपकाए जा रहे हैं। दरअसल, बिहार में चुनाव, मुद्दों और मसलों पर कम, जातीय गणित के हिसाब से ज्यादा जीते जाते हैं। बारिश के दिनों में वर्षों से आधे से ज्यादा बिहार पानी में डूबा रहता है। लोग सड़कों पर अपना डेरा बांधते हैं और चौमासा वहीं गुजारते हैं। कोई स्थायी इलाज नहीं। कोई पुख्ता उपाय नहीं। कोई रहने-खाने का इंतजाम नहीं। जातीयता हर बाढ़ और हर आफत पर भारी है। इस जातीय गणित ने पूरे राज्य का बंटाधार कर रखा है। जातीय गणित भी कुछ इस तरह है कि भाजपा को वहां हराना है तो नीतीश कुमार और लालू यादव के राजद को साथ आना होता है। जहां तक राजद की बात है, बिहार में यादवों की संख्या या प्रतिशत काफी है, इसलिए लालू को हराना है तो भाजपा और नीतीश कुमार को साथ आना पड़ता है। चिराग पासवान इन सबके बीच में कहीं आते हैं। हालांकि राज्य की राजनीति में उनकी पार्टी का कोई ज्यादा योगदान नहीं रहा क्योंकि वे केंद्र की राजनीति में ज्यादा भरोसा करते हैं। जितने सांसद लड़ाते हैं, अक्सर सब के सब जीत ही जाते हैं। यहां अक्टूबर-नवंबर में होने वाले चुनाव के नतीजों का अंदाजा लगाया जाए तो लोगों का कहना है कि अगर कोई अनहोनी या आसमानी सुल्तानी नहीं हुई, तो ये नतीजे भी हरियाणा या बहुत हद तक महाराष्ट्र के चुनाव नतीजों से ज्यादा अलग नहीं होंगे। हरियाणा में भाजपा की एकतरफा जीत हुई थी जबकि महाराष्ट्र में मिली-जुली। महाराष्ट्र के नतीजे इस तरह आए थे कि भाजपा से उसके दोनों साथी यानी शिंदे सेना और अजित पवार किसी तरह की सौदेबाजी की सूरत में नहीं रहे थे। यही वजह है कि वहां फडणवीस सरकार मजे से चल रही है। दोनों सहयोगी दलों में से एक बगावत भी कर ले तो सरकार की सेहत पर कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। इधर उत्तर भारत में रह-रहकर बादल बरस रहे हैं। गलियां, सड़कें सुड़क-सुड़क कर रही हैं। वाहन चीखें मार रहे हैं। दिन उगता है तो लगता है जैसे सूरज शर्मीला चम्पा का फूल हो! उठने से पहले ही जैसे डूबने को होता है। सांझ से ही सन्नाटा छा जाता है। बारिश की मंद-मंद फुहारें, जैसे पाला पड़ रहा हो! बूढ़ा आकाश शाम से ही ऊंघने लगता है। उसकी आंखों में नींद साफ देखी जा सकती है। कीचड़ और पानी के मिलन के बीच सड़कों पर पैदल चलते आदमी की तो पूछिए मत! वो सबको झेल रहा है।

सफाईकर्मी पिता की बेटी की भव्य शादी के लिए खड़ा हुआ समाज,दो बेटियों के कन्यादान की जिम्मेदारी उठाई,अयोध्या से महंत बुलाए

सीकर। शहर की एक गली में झाड़ू लगा रहे ये शख्स सफाईकर्मी राधेश्याम हैं। पिछले 20-25 साल से यही काम कर रहे हैं। उन्होंने शायद ही सोचा होगा कि जिस शहर में वे इतने साल से सफाई का जिम्मा उठा रहे हैं, एक दिन वही शहर उनकी बेटियों की भव्य शादी के लिए परिवार बनकर आगे आएगा।आज राधेश्याम के बेटियों निकिता और निशा की शादी की पूरे शहर में चर्चा है। इस शादी का जिम्मा उठाया है, सेठ अणतराम सिंघानिया चैरिटेबल ट्रस्ट ने।

एक महंगा मैरिज गार्डन को बुक किया गया है। शहरभर में 5 हजार से ज्यादा कार्ड बांटे गए हैं। हजारों लोगों के लिए पकवान बनाए गए हैं।मंडप के रीति-रिवाज के लिए अयोध्या से महंतों को बुलाया गया है।शहर की वाल्मिकी बस्ती में सफाईकर्मी राधेश्याम के घर की रौनक ही अलग थी। छोटी-सी बैठक से लेकर पूरा घर रंग-बिरंगी चुनरियों से सजाया गया है। बड़ी बेटी निशा (22) लाल-पीली चुनरी में सजी बैठी थी। उसके हाथों में गहरी मेहंदी रची है। सामने बैठी छोटी बहन निकिता (20) पीले दुपट्टे में मुस्कुरा रही है। दोनों एक-दूसरे को देख हंस पड़ती हैं। निशा अपने हाथों की मेहंदी को देख मुस्कुरा रही है। निकिता सहेलियों के बीच बैठी हैं। उन्हें महसूस हो रहा है कि वे अकेली नहीं हैं-पूरा शहर उनके साथ खड़ा है।निशा ने बताया कि जैसे ही हमारी शादी की बात शुरू हुई थी तब से पापा बहुत चिंता में रहते थे। महंगाई बहुत है और एक साथ दो बेटियों की शादी करना बहुत मुश्किल होता है। निकिता ने बताया कि मां-पापा सालों से थोड़े-थोड़े पैसे जमा कर रहे थे। जब उन्हें जोड़ा गया तो हमारे अनुमान से बहुत कम थे। मां तो कई बार टेंशन से रोने भी लगती थी। लेकिन अब सब अच्छा हो रहा है। सब लोग मेरे पापा की मदद कर रहे हैं।राधेश्याम ने बताया कि मेरी इनकम सीमित है। महीनेभर की कमाई से घर का खर्चा, दो बेटियों और दो छोटे बेटों की जिम्मेदारी-सब कुछ

संतुलित करना आसान नहीं था। निशा ने दसवीं तक पढ़ाई की, फिर हालात ने उसे घर की जिम्मेदारियों में लगा दिया। निकिता ने सिर्फ पांचवीं तक ही पढ़ाई की है। जब बेटियों की शादी की बात तय हुई, तो घर में खुशी आई, लेकिन साथ ही चिंता भी थी। राधेश्याम बताते हैं- एक पिता होने के नाते- मन में बरसों से यह सपना था कि बेटियों की बारात आए, ढोल बजे, मेहमान बैठें और विदाई सम्मान के साथ हो। लेकिन सवाल था-इतनी व्यवस्था कैसे होगी? जब मैंने अपनी मजबूरी सेठ अणतराम सिंघानिया चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रमोद सिंघानिया को बताई तो उन्होंने मेरी चिंता को कम करते हुए कहा कि अब ये हमारे घर की शादी है आप निश्चिंत होकर घर जाओ।ये सुनने के बाद मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैं उनका ये एहसान कभी नहीं भूल सकता हूं। मेरे पास पैसे नहीं थे, समझ नहीं आ रहा था बेटियों की शादी में खर्चा कैसे करूं। लेकिन मनोज चौधरी, प्रमोद सिघानियां ये वो नाम है जो भगवान बनकर आए मेरे लिए। पास में ही खड़ी दोनों बेटियों की मां साड़ी के पल्लू से आंसू पोंछते हुए बोलती है मैंने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था पूरा शहर मेरी बच्चियों को आशीर्वाद देगा।राधेश्याम की दोनों बेटियों की शादी के लिए शहर में दयालबाग मैरिज गार्डन को चुना गया है। जहां हजारों बाराती-घराती एक साथ इस खुशी में शामिल होंगे। जब हमारी टीम आयोजनकर्ताओं से मिलने पहुंची तो देखा वहां भी बिल्कुल ऐसे तैयारी हो रही थी, मानो उन्हीं की बेटी की शादी है। सेठ अणतराम सिंघानिया चैरिटेबल ट्रस्ट की विनीता सिंघानिया अपने हाथों में मेंहदी लगवा रही थीं। विनिता ने कहा कि यह आयोजन सिर्फ दो बेटियों की शादी नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता का सशक्त उदाहरण है।उन्होंने कहा कि समाज तब मजबूत होता है, जब हर वर्ग एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनें। प्रमोद सिंघानिया गार्डन में शादी की तैयारियों का जायजा ले रहे थे। उन्होंने बताया कि शादी समारोह के कार्ड में पंच परिवर्तन का जिक्र किया गया है।इसमें सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, स्वः का बोध, 'स्वदेशी' और नागरिक कर्तव्य शामिल है। शादी समारोह के आयोजन को लेकर मुख्यमंत्री की तरफ से भी बधाई संदेश आया है। साथ ही विश्व हिंदू परिषद ने भी शुभकामनाएं भेजी हैं।प्रमोद बताते हैं- राधेश्याम हमारे मोहल्ले में कई सालों से सफाई का काम करते आ रहे हैं। कई महीनों पहले जब उन्होंने अपनी बेटियों की शादी करने की चर्चा चलाई तब हमने एक भाई के नाते उनकी सारी चिंता अपने ऊपर ले ली।वे बताते हैं- वर्तमान में यूजीसी जैसे मामले चल रहे हैं। इन पर बहस होना अलग बात है, लेकिन उन्हें ही समाज की जमीनी तस्वीर मान लेना उचित नहीं है। वास्तविकता यह है कि आज भी हम सारे भेदभावों से ऊपर एकसाथ हैं।शादी में बारातियों के लिए हर तरह के पकवान बनवाए जा रहे हैं। हलवाई गुलाब जामुन, काजू कतली, गूंद-गिरी का हलवा, दही बड़े, कचौरी, पुलाव, चाट आइटम सहित अन्य व्यंजन बनाने में जुटे हैं।आयोजनकर्ताओं के अनुसार करीब 4 हजार से ज्यादा लोगों के खाने की व्यवस्था की गई है। ट्रस्ट की ओर से दोनों बेटियों को उनकी नई गृहस्थी के लिए साभी घरेलू सामान दिए जाएंगे।इसमें बेड, सोफा सेट, एलईडी टीवी, ड्रेसिंग टेबल, अलमारी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, कूलर, मिक्सर ग्राइंडर, बर्तन सेट, दुल्हन के कपड़े और शादी के जोड़े। साथ ही दोनों दूल्हों को एक-एक बाइक भी गिफ्ट की जाएगी।समाजसेवी जितेंद्र सिंह कारंगा ने बताया हम सब अलग-अलग पृष्ठभूमि से जरूर आते हैं, लेकिन दिल से एक हैं। समाज तभी मजबूत बनता है जब हम एक-दूसरे को परिवार की तरह अपनाएं और हम हर सुख-दुख में साथ खड़े है।नगर परिषद में नेता प्रतिपक्ष अशोक चौधरी बताते हैं- राधेश्याम हमारे यहां लंबे समय से सफाईकर्मी के तौर पर कार्यरत हैं। वह हमारे साथी हैं, परिवार का हिस्सा हैं।ऐसे समय में उनका साथ देना हम सबकी जिम्मेदारी है। हम सभी पार्षद और कर्मचारी मिलकर उनकी बेटियों की शादी पूरे धूमधाम और सम्मान के साथ करवाएंगे।शादी का पूरा खर्च सेठ अणतराम सिंघानिया चैरिटेबल ट्रस्ट उठा रहा है, तो कई समाज के लोग भी इस आयोजन सफल बनाने में जुटे हैं।कोई पंडाल की व्यवस्था संभाल रहा है, तो किसी के पास भोजन की जिम्मेदारी है। कुछ लोग साज-सज्जा और लाइटिंग में लग गए। शहर की कई बड़ी हस्तियों ने भी समारोह में शामिल होने की सहमति दी है।शादी में हजारों लोग बारात का स्वागत करेंगे। अयोध्या, हरिद्वार सहित देशभर से कई संत आएंगे।शादी में जगद्गुरु अर्जुन द्वाराचार्य, कृपालु राम भूषण देवाचार्य महाराज, पोकरण विधायक प्रतापपुरी, सांगलिया पीठाधीश्वर ओम दास महाराज, महंत मनोहर शरण शास्त्री महाराज, चंद्रमादास महाराज और सीकर के पूर्व सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती भी शामिल होंगे।निशा की शादी योगेश और निकिता की शादी विशाल के साथ होगी। निशा की बारात अजमेर के कल्याणीपुरा और निकिता की बारात फतेहपुर से 19 फरवरी को पहुंचेगी।

शराब बंदी से बिहार को हर साल 20 हजार करोड़ का नुकसान, मांझी के बाद कुशवाहा की पार्टी भी चाहती है बैन हटे

पटना। बिहार में शराबबंदी का मुद्दा फिर से गरमा गया है। 10 साल बाद इसकी समीक्षा की मांग भरी सदन में सरकार में साझेदार दल के विधायक ने कर दी है। वहीं, कांग्रेस ने शराब की होम डिलीवरी का दावा किया है। मांझी ने इस कानून को राज्य के लिए आर्थिक जोखिम करार दिया है। अप्रैल 2016 में नीतीश सरकार ने बिहार में शराबबंदी कर दी। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं के खिलाफ हिंसा को कम करना, स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवस्था ठीक करना था। यह पॉलिसी बिहार प्रोहिबिशन एंड एक्साइज एक्ट, 2016 पर आधारित है, जो शराब के उत्पादन, बिक्री और सेवन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाती है। बिहार में शराबबंदी कानून की समीक्षा की डिमांड समय-समय पर होती रही है। इसमें विपक्ष के नेता से लेकर सत्ताधारी दल के नेता तक शामिल हैं। ताजा डिमांड नीतीश सरकार में साझीदार राष्ट्रीय लोक मोर्चा विधायक माधव आनंद ने की है। 17 फरवरी को माधव आनंद ने विधानसभा में कहा, 'अब समय आ गया है जब इस कानून की व्यापक समीक्षा होनी चाहिए। इसे बेहतर ढंग से लागू करने, जागरूकता बढ़ाने और जहां जरूरी हो, वहां संशोधन किए जाने चाहिए।' शराब बिक्री से बिहार को एक्साइज ड्यूटी (शराब पर टैक्स) मिलता था। यह राज्य की कुल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 1फीसदी था और राज्य के अपने टैक्स राजस्व का 15फीसदी से ज्यादा हिस्सा था। शराबबंदी से पहले वाले वित्तीय वर्ष 2015-16 में राज्य को शराब से रु3,142 करोड़ टैक्स के तौर पर मिले थे।शराबबंदी के बाद 2016-17 में यह घटकर 30 करोड़ रह गया, और अब लगभग शून्य है। जबकि, शराबबंदी नहीं वाले राज्यों में औसतन 2022-23 में एक्साइज से उएउइ का 1फीसदी राजस्व आता है। बिहार में यह पूरी तरह खत्म हो गया। पीआरएस की रिपोर्ट के मुताबिक, बैन से बिहार को हर साल उएउइ का 1फीसदी का नुकसान हो रहा है। प्रशांत किशोर के दावे के मुताबिक, बिहार को शराबबंदी से हर साल करीब 20,000 करोड़ रुपए का नुकसान हो रहा है।

कांग्रेस का दावा- राहुल को गोली मारने की धमकी मिली

नयी दिल्ली। करणी सेना के एक कार्यकर्ता ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को गोली मारने की धमकी दी है। कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने गुरुवार को यह दावा किया। उन्होंने धमकी वाला वीडियो भी सोशल मीडिया एक्स पर शेयर किया है। पवन खेड़ा ने लिखा कि पूरा आरएसएस-भाजपा तंत्र एक 'गोडसे फैक्ट्री' है। तथाकथित करणी सेना द्वारा राहुल गांधी और '25 सांसदों' के खिलाफ दी गई धमकी कोई अलग-थलग पड़ी घटना नहीं है। यह एक सुनियोजित और कपटपूर्ण साजिश का हिस्सा है। उन्होंने एक्स पर लिखा- कट्टरपंथ ऐसे ही काम करता है। वे पहले एक झूठ बनाते हैं, पॉलिटिकल अथॉरिटी उसे आगे बढ़ाती हैं और तब तक फैलाती हैं जब तक उनके फॉलोअर्स के मन में नफरत और हिंसा नहीं भर जाती। तब भी गोडसे बनाया गया था। आज फिर एक और गोडसे को तैयार किया जा रहा है। वीडियो सामने आने के बाद कोटा पुलिस ने आरोपी राज आमेरा को पकड़ लिया है। भास्कर रिपोर्टर ने राजा आमेरा से बात की। उसने कहा- मुझे वीडियो की जानकारी नहीं है। विपक्ष ने फेक आईडी बनाकर वीडियो बनाया है। मैं सनातन से जुड़ा हुआ हूं। देश को हिंदू राष्ट्र बनाना चाहता हूं। पवन खेड़ा ने धमकी वाला वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि पहले किरेन रिजिजु ने झूठ बोला। उन्होंने देश को गुमराह किया कि कांग्रेस सांसदों ने लोकसभा में ओम बिरला का अपमान किया। फिर भाजपा सांसदों ने यह दोहराना शुरू किया कि राहुल गांधी 'भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' हैं। यह विपक्ष को बदनाम करने और विशेषकर राहुल जी के खिलाफ हिंसा को वैध ठहराने का एक सुनियोजित अभियान है। 11 फरवरी को भाजपा ने दावा किया था कि कांग्रेस के 20-25 सांसदों ने स्पीकर ओम बिरला के चैंबर्स में घुसकर उनसे बदसलूकी की। प्रियंका गांधी, वेणुगोपाल वहां मौजूद थे लेकिन उन्होंने सांसदों को रोकने की बजाय, बदतमीजी के लिए उकसाया। बाद में विपक्ष ने स्पीकर ओम बिरला के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस पेश कर दिया। इसमें 118 सांसदों के हस्ताक्षर हैं। सूत्रों के हवाले से दावा किया है कि ओम बिरला अब लोकसभा नहीं जाएंगे। अविश्वास प्रस्ताव के गिरने के बाद ही वे स्पीकर की चेयर संभालेंगे। विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव पर सदन में 9 मार्च को चर्चा हो सकती है। 13 फरवरी को बजट सत्र के वर्तमान सेशन का आखिरी दिन था। इसके बाद 8 मार्च से सदन की कार्यवाही फिर से शुरू होगी।

'फ्री खाना मिलेगा तो लोग काम क्यों करेंगे'-सुप्रीम कोर्ट

मुफ्त बिजली-पानी देने से काम करने की आदत ही खत्म हो जाएगी,सरकारें रोजगार दें

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को फ्रीबीज कल्चर (मुफ्त की रेवड़ियां) पर कहा कि अगर सरकार लोगों को सुबह से शाम तक फ्री खाना, गैस और बिजली देती रहेगी तो लोग काम क्यों करेंगे। ऐसे तो काम करने की आदत खत्म हो जाएगी। सरकार को रोजगार देने पर फोकस करना चाहिए। कोर्ट ने कहा कि गरीबों की मदद करना समझ में आता है, लेकिन बिना फर्क किए सबको मुफ्त सुविधा देना सही नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी तमिलनाडु पावर डिस्ट्रीब्यूशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड की याचिका पर सुनवाई करते हुए की। इसमें कंज्यूमर्स की फाइनेंशियल हालत की परवाह किए बिना सभी को फ्री बिजली देने का प्रस्ताव था। सीजेआई सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम पंचोली की बेंच ने कहा कि देश के ज्यादातर राज्य राजस्व घाटे में हैं और फिर भी वे विकास को नजरअंदाज करते हुए मुफ्त की घोषणाएं कर रहे हैं।

सीजेआई सूर्यकांत के 3 कमेंट हैं की आपको लोगों के लिए रोजगार के रास्ते बनाने चाहिए, ताकि वे कमा सकें और अपनी इज्जत और आत्म सम्मान बनाए रख सकें। जब उन्हें एक ही जगह से सबकुछ मुफ्त मिल जाएगा तो लोग काम क्यों करेंगे। क्या हम ऐसा ही देश बनाना चाहते हैं? अचानक चुनाव के आस-पास स्कीम क्यों अनाउंस की जाती हैं? अब समय आ गया है कि सभी पॉलिटिकल पार्टियां, नेता फिर से सोचें। अगर हम इस तरह से उदारता दिखाते रहे तो हम देश के डेवलपमेंट में रुकावट डालेंगे। एक बैलेंस होना चाहिए। ऐसा कब तक चलेगा? हम भारत में कैसी संस्कृति विकसित कर रहे हैं? यह समझ में आता है कि कल्याणकारी योजना के तहत आप उन लोगों को राहत दें, जो बिजली का बिल नहीं चुका सकते। जो लोग भुगतान करने में सक्षम हैं और जो नहीं हैं, उनके बीच कोई फर्क किए बिना मुफ्त सुविधा देना क्या तुष्टीकरण की नीति नहीं है? दरअसल सुप्रीम कोर्ट तमिलनाडु पावर डिस्ट्रीब्यूशन कॉरपोरेशन की याचिका पर सुनवाई कर रहा था। कंपनी ने 2024 के विद्युत संशोधन नियमों के नियम 23 को चुनौती दी है। इसमें उपभोक्ताओं की आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी को मुफ्त बिजली देने का प्रस्ताव है। राज्य सरकार घरेलू उपभोक्ताओं को हर दो-महीने में लगभग 100 यूनिट तक मुफ्त बिजली देती है, बिना किसी शर्त के यानी उपभोक्ता चाहे कितना भी खर्च करे, पहली 100 यूनिट के लिए बिल नहीं देना होता। कोर्ट ने इस मामले में केंद्र सरकार और अन्य पक्षों को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने यह भी पूछा कि बिजली दरों की घोषणा के बाद तमिलनाडु की कंपनी ने अचानक मुफ्त बिजली देने का फैसला क्यों किया। यह पहली बार नहीं है, जब कोर्ट ने फ्रीबीज को लेकर सख्त टिप्पणी की है। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने 12 फरवरी 2025 को कहा था, 'लोग काम करना नहीं चाहते, क्योंकि आप उन्हें मुफ्त राशन दे रहे हैं। बिना कुछ किए उन्हें पैसे दे रहे हैं।' कोर्ट ने केंद्र से पूछा कि इन लोगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की बजाय क्या आप मुफ्त की योजनाएं लागू करके परजीवियों की जमात नहीं खड़ी कर रहे हैं? वहीं 9 दिसंबर 2024 को भी केंद्र सरकार के मुफ्त राशन बांटने पर सख्त टिप्पणी की थी। कोर्ट ने कहा था- कब तक ऐसे मुफ्त राशन बांटा जाएगा। सरकार रोजगार के अवसर क्यों नहीं पैदा कर रही? तब कोर्ट अकुशल मजदूरों को मुफ्त राशन कार्ड दिए जाने से संबंधित मामले पर सुनवाई कर रही थी। इस दौरान केंद्र ने अदालत को बताया था कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के तहत 81 करोड़ लोगों को मुफ्त या रियायती राशन दिया जा रहा है।

सड़क हादसों से भारत को होता है हर रोज़ 500 करोड़ का नुकसान, हैं बड़ी वजह

नयी दिल्ली। बीते कुछ अरसे से प्रतिदिन सड़क दुर्घटनाएं देखने में आ रही हैं। यह हाल केवल हमारे देश का नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया में ऐसी दुर्घटनाएं एक महामारी का रूप ले चुकी हैं। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के अनुसार, विश्वभर में सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों की संख्या के मामले में भारत पहले स्थान पर है। यह केवल आंकड़ों की बात नहीं, बल्कि हर दिन टूटते परिवारों और बिखरते जीवन की कहानी है।

वर्ष 2024 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग 1.80 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवा बैठे, जो प्रतिदिन औसतन 494 मौतों के बराबर है।

हर तीन मिनट में एक मौत तथा साल में 4-5 लाख लोग हमेशा के लिए अपंग और अक्षम हो जाते हैं। सड़क हादसों में युवा सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। विश्व बैंक के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं के कारण भारत को प्रतिदिन लगभग 500 करोड़ रुपये का नुक़सान होता है।

सीधा बोझ स्वास्थ्य प्रणाली पर पड़ता है। अस्पतालों के आपातकालीन विभाग में आने वाले कुल मरीज़ों में से 20-50फीसदी सड़क दुर्घटना पीड़ित होते हैं, अस्पताल में भर्ती होने वाले 10-30फीसदी मरीज़ और गंभीर मस्तिष्क चोट के 60-70फीसदी मामलों में भी यही होते हैं। नियोक्ताओं और उद्योगों पर भार पड़ता है। काम के घंटे का नुक़सान होता है, वाहन क्षतिग्रस्त होते हैं, चिकित्सा पर अधिक खर्च आता है।

सबसे गहरा असर परिवारों पर पड़ता है। जब परिवार का कमाने वाला सदस्य सड़क दुर्घटना में जान गंवा बैठता है या स्थायी दिव्यांग हो जाता है, तो पूरा परिवार आर्थिक, सामाजिक और मानसिक संकट में फंस जाता है।

वैसे तो मानव व्यवहार है दुर्घटनाओं का कारण। आंकड़े स्पष्ट बताते हैं कि 75-80फीसदी सड़क दुर्घटनाओं में चालक की भूमिका प्रमुख होती है।

इनमें कुछ व्यवहार विशेष रूप से जानलेवा साबित हो रहे हैं- ग़लत तरीक़े से ओवरटेक करते हैं, व्यस्त सड़क पर गाड़ी की रफ्तार इतनी तेज़ होती है कि उस पर चालक का ही नियंत्रण नहीं रहता।

बड़े वाहन, जैसे- ट्रक, बस आदि के बहुत क़रीब जाकर गाड़ी चलाते हैं या उसे ओवरटेक करने की ज़िद में रहते हैं।

कार में लगे एयर बैग जैसी तमाम सुविधाएं भी रफ़्तार के सामने हार मान लेती हैं।

मोबाइल हाथ में लेकर बात कर रहे हों या ईयरफोन पर, दोनों ही स्थितियों में

चालक का ध्यान सड़क से हटता है।

लोग हेलमेट या सीटबेल्ट तब लगाते हैं जब सड़क पर जांच हो रही हो। उन्हें चालान से डर लगता है लेकिन दुर्घटना से नहीं।

लोग ईंधन बचाने के चलते सड़क पर वाहन को उल्टी दिशा में चलाते हैं। यह आदत सड़क दुर्घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार है।

18 साल से कम उम्र के बच्चे तेज़ रफ्तार से गाड़ी दौड़ाते हैं। बिना लाइसेंस और उचित उम्र के गाड़ी चलाना अपराध के साथ-साथ राह चलते लोगों के लिए भी ख़तरा है।

गाड़ी में लगी हाई-इंटेंसिटी रोशनी सामने से आने वाले वाहन चालक के लिए जोखिम पैदा करती है।

व्यवहार, कानून और व्यवस्था, तीनों स्तरों पर सुधार की आवश्यकता है, सड़क पर रफ्तार की सीमा स्पष्ट रूप से चिह्नित होनी चाहिए।

हाईवे और शहरों में ऑटोमैटिक स्पीड कैमरे बढ़ाए जाने चाहिए, ताकि ऐसी ग़लती करने वालों पर कठोर कार्रवाई की जा सके।

भारी वाहनों के लिए अलग लेन निर्धारित की जानी चाहिए और उनके नज़दीक से ओवरटेक करने पर कड़े नियम भी लागू होने ज़रूरी हैं। ड्राइविंग लाइसेंस टेस्ट में डिफेंसिव ड्राइविंग (सावधानीपूर्ण ड्राइविंग) को अनिवार्य किया जाए।

कानून होने के बावजूद उसका पालन कमज़ोर है। इसलिए मोबाइल के उपयोग की पहचान करने वाले एआई कैमरे लगाए जाने चाहिए।

नए नियमों के तहत एक वर्ष में 5 से ज़्यादा चालान होने पर लाइसेंस निलंबन कानून को ज़ीरो टोलरेंस के साथ लागू किया जाए और अनिवार्य पुनः प्रशिक्षण का भी सख़्ती से पालन किया जाए।

उल्टी दिशा में वाहन चलाने पर भारी जुर्माना और वाहन ज़ब्ती भी होना चाहिए।

नाबालिग के गाड़ी चलाने के नियम सख़्ती से लागू हों। स्कूल स्तर से ही प्रभावी सड़क सुरक्षा शिक्षा शुरू हो।

वाहन कंपनियां गाड़ियों में हैलोजन लाइट को मानक के रूप में लगाती हैं, पर लोग इन्हें बाहर से बदलवाकर हाई बीम लाइट लगवा लेते हैं। इसके दुरुपयोग पर चालान और चेतावनी प्रणाली लागू की जानी चाहिए।

पाक सीएम मरियम के लिए 10 अरब रुपए का लग्जरी जेट खरीदने का आरोप,मंत्री बोलीं- सरकारी एयरलाइन के लिए खरीदा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में पंजाब सरकार पर मुख्यमंत्री मरियम नवाज के लिए लग्जरी जेट खरीदने का आरोप लगा है। ट्रिब्यून एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक गल्फस्ट्रीम जी500 मॉडल के इस विमान की कीमत करीब 10 अरब पाकिस्तानी रुपए है। विमान की खरीद को लेकर सोशल मीडिया में विवाद तेज हो गया है। दावा किया जा रहा है कि यह जेट मुख्यमंत्री मरियम नवाज के उपयोग के लिए खरीदा गया है। यूजर्स ने इसे वीआईपी उड़ानों के लिए कॉल साइन 'पंजाब 2' का हवाला देकर उड़ाने के आरोप लगाए। रिपोर्ट्स के अनुसार, यह विमान फिलहाल अमेरिका में रजिस्टर्ड है और अभी पाकिस्तान में इसका रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ है। इसका रजिस्ट्रेशन नंबर एन144एस बताया जा रहा है। पंजाब की सूचना मंत्री अजमा बोखारी ने आरोपों से इनकार करते हुए कहा है कि यह जेट मुख्यमंत्री के लिए नहीं, बल्कि एयर पंजाब के लिए तैयार की जा रही फ्लीट का हिस्सा है।लग्जरी जेट खरीदने का पूरा विवाद एक पायलट भर्ती विज्ञापन से शुरू हुआ। सर्विसेज एंड जनरल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट की ओर से जारी इस विज्ञापन में गल्फस्ट्रीम जी-500 उड़ाने के लिए प्रशिक्षित पायलट को प्राथमिकता देने की बात कही गई थी। विज्ञापन सामने आते ही सवाल उठने लगे कि क्या सरकार पहले से ही इस मॉडल का विमान खरीद चुकी है। एविएशन एक्सपर्ट्स का कहना है कि इतनी अहम शर्त

आमतौर पर तभी रखी जाती है, जब विमान पहले से संचालन में हो या बहुत जल्द शामिल होने वाला हो। इसी के बाद सोशल मीडिया पर यह दावा फैल गया कि पंजाब सरकार ने मुख्यमंत्री के उपयोग के लिए लग्जरी जेट खरीदा है। पंजाब की सूचना मंत्री अजमा बोखारी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि एयर पंजाब के लिए एक बेड़ा तैयार किया जा रहा है। कुछ विमान खरीदे जाएंगे और कुछ किराये पर लिए जाएंगे। मरियम नवाज पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की पहली महिला मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने फरवरी 2024 में पद संभाला और इस पद पर पहुंचने वाली वह देश के किसी भी प्रांत की पहली महिला बनीं। रियम नवाज 2011 में सक्रिय राजनीति में आई थीं। उन्होंने अपनी राजनीति की शुरुआत यूनिवर्सिटीज में और महिलाओं के मुद्दों पर भाषण देकर की थी। साल 2017 मरियम के लिए सबसे अच्छा रहा, लेकिन इसी साल उनके पिता नवाज शरीफ को पाकिस्तानी सुप्रीम कोर्ट ने पनामा पेपर्स में नाम आने पर चुनाव के लिए अयोग्य घोषित कर दिया था। यहां से मरियम ने अपनी पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) की कमान संभाली। इसी साल बीबीसी ने उन्हें अपनी 100 प्रभावशाली महिलाओं की लिस्ट में जगह दी। इसके बाद वह न्यूयॉर्क टाइम्स की दुनिया की 11 ताकतवर महिलाओं की लिस्ट में जगह बनाने में कामयाब रहीं। गल्फस्ट्रीम जी500 को दुनिया के सबसे लग्जरी बिजनेस जेट्स में गिना जाता है। इसकी केबिन डिजाइन और सुविधाएं इसे आसमान में चलता फाइव-स्टार सुइट बनाती हैं। विमान में आमतौर पर 10 से 19 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था होती है, जिसे जरूरत के मुताबिक तीन अलग-अलग रहने के हिस्सों में बांटा जा सकता है। सीटें पूरी तरह फ्लैट बेड में बदल जाती हैं। बीच में कॉन्फ्रेंस टेबल लगाई जा सकती है, जहां मीटिंग की जा सके। लंबी उड़ान के दौरान आराम के लिए अलग विश्राम क्षेत्र भी बनाया जा सकता है। जी500 का केबिन इंडस्ट्री में सबसे शांत केबिन में गिना जाता है। केबिन प्रेशर और हवा की गुणवत्ता ऐसी रखी जाती है कि लंबी दूरी की उड़ान में यात्रियों को कम थकान महसूस हो। बड़ी-बड़ी अंडाकार खिड़कियां ज्यादा प्राकृतिक रोशनी देती हैं। विमान में अलग गैली (किचन स्पेस), पर्याप्त लगेज स्पेस और एडवांस एयर-फिल्ट्रेशन सिस्टम दिया गया है। सुरक्षा के लिए आधुनिक कॉकपिट सिस्टम और दोताकतवर इंजन लगाए गए हैं। लंबी दूरी, कम शोर और होटल जैसी सुविधाओं की वजह से इसे वीआईपी और कॉर्पोरेट यात्राओं के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

बेटी अपनी उम्र से ज्यादा मैच्योर बातें करती है:उसकी ये समझदारी अच्छी है या चिंता की बात, क्या करना चाहिए?

नयी दिल्ली। समझेंगे मामले को एक्सपर्ट: डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी से सवाल जवाब के माध्यम से- सवाल- मैं लखनऊ से हूं। मेरी 13 साल की बेटी काफी समझदार है। लेकिन कई बार वह ऐसी बातें करती है, जो उसकी उम्र के मुकाबले काफी ज्यादा मैच्योर होती हैं। कभी वह रिश्तों, जिम्मेदारियों या जिंदगी को लेकर ऐसी बात बोल देती है कि लगता है कि इतनी छोटी लड़की के दिमाग में ये बात कैसे आई।कभी उसकी समझदारी पर खुशी होती है तो कभी चिंता। मैं समझ नहीं पा रही कि यह समझदारी का संकेत है या कुछ और। कुछ समय से मैंने एक बात नोटिस की है कि अब वह जरूरत से ज्यादा जिम्मेदार, गंभीर और चुप रहने लगी है। क्या यह नॉर्मल डेवलपमेंट का हिस्सा है या इसके पीछे कोई अन्य कारण हो सकता है। बतौर पेरेंट मुझे क्या करना चाहिए? जवाब- आपकी चिंता वाजिब है। अक्सर जब कोई बच्चा अपनी उम्र से ज्यादा मैच्योर बातें करता है तो पेरेंट्स इसे 'सयानापन' मानकर इग्नोर कर देते हैं। लेकिन आप एक समझदार पेरेंट हैं, जो इसके पीछे के मनोवैज्ञानिक कारणों को जानना चाहती हैं।सबसे पहले तो यह समझिए कि 13 साल की उम्र बहुत सेंसिटिव होती है। बच्चा 'किशोरावस्था' की दहलीज पर कदम रख रहा होता है। इस उम्र में बच्चे का ब्रेन बहुत तेजी से विकसित हो रहा होता है। खासकर वह हिस्सा, जो सोचने-समझने, सवाल करने और भविष्य के बारे में विचार करने से जुड़ा होता है। इसलिए इस उम्र में बच्चे हर विषय पर अपनी राय रखना चाहते हैं। इसमें चिंता की कोई बात नहीं है। हालांकि इसके पीछे के कारणों को आइडेंटिफाई करना जरूरी है। कई बार ऐसा होता है कि जब बच्चे घर में अक्सर समझदारी और जिम्मेदारी भरी बातें सुनते हैं तो वे सोचते हैं कि उन्हें भी 'समझदार' बनना पड़ेगा। इसके अलावा आज की पीढ़ी सोशल मीडिया एक्सपोजर के कारण बहुत जल्दी रिलेशनशिप, जिंदगी, असफलता और तुलना से रूबरू हो जाती है। इससे उनकी बातें बड़ों जैसी लग सकती हैं, लेकिन

वे अभी भी बच्चे ही होते हैं। कुछ बच्चे स्वभाव से ही बहुत गहराई से सोचते हैं। वे दूसरों की भावनाएं जल्दी समझ लेते हैं। ऐसे बच्चे अक्सर मैच्योर लगते हैं, लेकिन उन्हें सपोर्ट की जरूरत होती है। बच्चे के बिहेवियरल मैच्योरिटी के पीछे ऐसे कई कारण जिम्मेदार हो सकते हैं।हर बच्चा अलग होता है। वह अपनी गति से मानसिक और भावनात्मक रूप से बड़ा होता है। कुछ बच्चों का व्यवहार उम्र से थोड़ा ज्यादा समझदार लग सकता है, जो पूरी तरह नॉर्मल है। लेकिन जब यह मैच्योरिटी बच्चे से उसका बचपन छीनने लगे या वह अपनी भावनाओं को दबाने लगे, तब यह चिंताजनक है। इसलिए जरूरी है कि पेरेंट्स नॉर्मल और चिंताजनक बिहेवियर के फर्क को समझें। इन संकेतों से आप समय रहते यह जान सकती हैं कि बच्ची की मैच्योरिटी स्वाभाविक है या किसी प्रेशर का नतीजा। इसके अनुसार कुछ जरूरी कदम उठा सकती हैं। ऐसी स्थिति में पेरेंट्स क्या करें? जब बच्चा अपनी उम्र से ज्यादा मैच्योर व्यवहार दिखाए तो घबराने के बजाय संतुलित रवैया अपनाएं। आपकी प्रतिक्रिया ही तय करती है कि बच्चा खुद को कैसे ढालेगा। इसके लिए कुछ बातों का खास ख्याल रखें। बच्चे की समझदारी को सराहें, लेकिन बार-बार ये न कहें कि 'तुम तो बहुत समझदार हो।' इससे बच्चे पर यह दबाव बन सकता है कि उसे हर हाल में मजबूत और समझदार ही बने रहना है। उसे यह महसूस कराएं कि बच्चा होना, गलती करना, परेशान होना और मदद मांगना बिल्कुल ठीक है।

उससे कहें, 'तुम बच्ची हो, तुम्हें इतना ज्यादा सीरियस होने की जरूरत नहीं है।' बातचीत के दौरान बच्चे को जज बिल्कुल न करें। ऐसे सवाल पूछें- 'बेटा, तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?' 'तुमने ये कहां सुना?' 'तुम ऐसा क्यों सोचती हो?' उसकी बातों को बिना टोके और बिना जजमेंट के सुनें। उसे मौज-मस्ती और खेलने का स्पेस दें बच्चा अगर कभी थोड़ी शैतानी करे, मस्ती करे तो बिल्कुल भी टोकें नहीं। उसकी सराहना करें। खुद भी उसके साथ हंसें-खेलें, हल्की-फुल्की बातें करें, मस्ती-मजाक करें। उसे यह एहसास दिलाएं कि बड़ा बनने की कोई जल्दी नहीं है। बचपन जीना भी बेहद जरूरी है। कोशिश करें कि आप भी उसके साथ बच्चे बन जाएं। खुद भी कभी बचपना करें, छोटी-छोटी शैतानियों को साथ मिलकर इंजॉय करें। इस बात पर नजर रखें कि वह सोशल मीडिया पर क्या देख रही है, किस तरह का कंटेंट उसकी सोच को प्रभावित कर रहा है। जरूरत हो तो स्क्रीन टाइम और कंटेंट को लेकर बातचीत करें। अगर बच्ची लगातार चुप रहे, इमोशनली बहुत भारी बातें करने लगे या खुद को ज्यादा दबाकर रखे तो काउंसलर या साइकोलॉजिस्ट से बात करने में बिल्कुल न हिचकें। कई बार माता-पिता अनजाने में ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जो बच्चे पर प्रेशर बढ़ा देती हैं। अच्छे इरादों के बावजूद कुछ प्रतिक्रियाएं बच्चे को गंभीर या इंट्रोवर्ट बना सकती हैं। इसलिए जरूरी है कि पेरेंट्स अपनी भूमिका को लेकर सतर्क रहें और कुछ कॉमन गलतियों से बचें।अंत में मैं यही कहूंगी कि आपकी चिंता बताती है कि आप एक सजग और संवेदनशील मां हैं। समझदारी अच्छी बात है, लेकिन बचपन की कीमत पर नहीं। 13 साल की उम्र में मैच्योर बातें करना कई बार सामान्य होता है। लेकिन अगर इसके साथ चुप्पी बढ़ रही हो, जरूरत से ज्यादा जिम्मेदारी का भाव आ रहा है या बिटिया अपनी भावनाएं दबाने लगी है, तो इसे नजरअंदाज न करें। आपका काम उसे जल्दी बड़ा बनाना नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित महसूस कराना है। उसे यह भरोसा दिलाएं, 'कोई जिम्मेदारी तुम्हें अकेले नहीं उठानी है। हम तुम्हारे साथ हैं।'

विजय देवरकोंडा का घर लाइट्स से हुआ रौशन,रश्मिका मंदाना के साथ शादी की चर्चा, जल्द उदयपुर में बंध सकते हैं शादी के बंधन में

मुंबई। साउथ एक्टर विजय देवरकोंडा और एक्ट्रेस रश्मिका

मंदाना इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में हैं। दावा किया जा रहा है कि दोनों जल्द ही शादी के बंधन में बंध सकते हैं। इसी बीच एक वीडियो सामने आया है, जिसमें विजय देवरकोंडा का घर फूलों और लाइट्स से सजा नजर आ रहा है। हालांकि, इस मामले में अब तक दोनों स्टार्स की तरफ से कोई ऑफिशियल बयान सामने नहीं आया है। दरअसल, यह वीडियो बुधवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें देखा जा सकता है कि विजय देवरकोंडा के घर को लाइट्स से सजाया जा रहा था। इस वीडियो के वायरल होते ही सोशल मीडिया यूजर्स ने कमेंट्स करना शुरू कर दिया। एक फैन ने लिखा, मैं खुशी से चिल्ला रही हूं।, दूसरे ने कमेंट किया, वाह, आखिरकार शादी वाली वाइब्स आ ही गईं।, तीसरे ने लिखा, क्यूटीज, बधाई हो। इसके अलावा कई और यूजर्स ने कमेंट किया और लिखा अब इंतजार नहीं हो रहा है।हाल ही में सोशल मीडिया पर एक कार्ड वायरल हुआ, जिस पर विजय देवरकोंडा का नाम लिखा था। इसके बाद लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि यह दोनों की शादी का कार्ड है। कार्ड में लिखा था कि परिवार के आशीर्वाद से रश्मिका और विजय 26.02.26 को एक छोटे और निजी समारोह में शादी करेंगे। वे अपनी नई जिंदगी की शुरुआत अपनों के साथ करना चाहते हैं और उनका आशीर्वाद उनके लिए बहुत मायने रखता है।इंडिया टुडे के मुताबिक, शादी की रस्मों की तैयारियां पहले से ही शुरू हो चुकी हैं। सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो और चर्चाओं

ने पुष्टि की है कि दोनों सितारे इस आयोजन को बेहद प्राइवेट रखना चाहते हैं। यहां तक कि शादी में नो-फोन पॉलिसी की भी बात सामने आ रही है, ताकि निजी क्षणों को मीडिया और पब्लिक के कैमरों से बचाया जा सके। बेहद खास बात यह है कि शादी उदयपुर के किसी ऐतिहासिक महल या दरबार शैली के स्थल में होने की अटकलें हैं, जिससे यह आयोजन और भी भव्य होने की उम्मीद जताई जा रही है।शादी के बाद 3 से 4 मार्च के आसपास एक रिसेप्शन पार्टी भी आयोजित होने की खबर है, जिसमें फिल्म और सोशल सर्किल के कई नामी चेहरे शामिल हो सकते हैं। यह रिसेप्शन हैदराबाद या बंजारा हिल्स के किसी प्रीमियम स्थल पर होने की चर्चाएं सुनी जा रही हैं। हालांकि इसकी पुष्टि भी अभी तक आधिकारिक तौर पर नहीं आई है, लेकिन मीडिया सर्कल में यह जानकारी तेजी से फैल रही है।

छोटे चॉल में रहे, काम मांगने पर संगीतकार ने फेंकी डायरी,समीर के गाने पर नुसरत फतेह रोए, सबसे ज्यादा सॉन्ग लिखने का वर्ल्ड रिकॉर्ड

मुंबई। आप चाहें मिलेनियल हों, जेनरेशन ज़ी हों, जेनरेशन अल्फा या नई जेनरेशन बीटा हों...एक चीज जो इन सभी को एक-दूसरे से जोड़ती है, वो समीर अनजान के गाने हैं। तीन दशक से वो अपने गानों के जरिए प्यार, दोस्ती, हार्टब्रेक से लेकर पार्टी मोड तक हर मौके और हर फीलिंग के लिए अल्फाज लिख रहे हैं। उनके सपने बहुत छोटे-छोटे थे, लेकिन कलम की जादूगरी ने उन्हें ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया, जहां से वो पीछे देखते हैं तो खुद पर यकीन नहीं होता। कभी शब्दों का ऐसा जाल बुना कि पाकिस्तानी गायक नुसरत फतेह अली खान भी गाते वक्त रो पड़े। एक लाइन के लिए उन्हें 150 टेक लेने पड़े थे। समीर की चाहत कभी रेडियो पर अपना एक गाना सुनने की थी, लेकिन आज उनके नाम चार हजार से अधिक गाने लिखने का वर्ल्ड रिकॉर्ड है। कभी समीर गलियों में अपना गाना बजते सुनना चाहते थे, पिछले तीन दशक से उनके गाने न सिर्फ बज रहे हैं बल्कि अब उनके रीमिक्स भी बन रहे हैं। अपनी सफलता को वह भगवान की नेमत मानते हैं।मैं बनारस से हूं, लेकिन मेरी परवरिश बनारस शहर में नहीं हुई है। मैं बनारस के एक गांव ओदार में पला-बढ़ा हूं। वो गांव तो अब सपनों में ही दिखता है, हकीकत में कुछ वैसा नहीं है। अब गांव जाता हूं तो रोना आता है। गांव की वो चौपाल, कच्चे मकान, महुआ-नीम के पेड़, लोग, संकरी गलियां वो सब नेस्तनाबूद हो गए। गांव का बुरी तरह से शहरीकरण हो गया है। अब मैं सिर्फ इसलिए जाता हूं क्योंकि वो मेरी मातृभूमि है और वहां से मेरी यादें जुड़ी हैं, लेकिन गांव को देखकर बहुत दुख होता है। हम मुझे थोड़ी बहुत संगीत की भी जानकारी हो गई और मैं मुशायरों में जाने लगा। उत्तर प्रदेश का कोई भी ऐसा जिला नहीं होगा, जहां मैंने मुशायरा न किया हो। ये सब करते-करते मैं रेडियो तक पहुंच गया, लेकिन तब तक मेरे दिमाग में कभी नहीं आया कि मुझे गीतकार बनना है। मैं बस चीजों को एंजॉय कर रहा था। मैं पढ़ाई के साथ ट्यूशन भी पढ़ाता था। मैं पत्रकारिता भी कर रहा था। इन सबके बीच मैंने सेंट्रल बैंक की नौकरी भी जॉइन कर ली और दो दिन के लिए काम पर भी गया। जब मैं दूसरे दिन अपनी कुर्सी पर बैठ रहा था, तब मेरे अंदर से आवाज आई कि ये तुम्हारी जगह नहीं है। तुम गलत फैसला कर रहे हो। दिल की बात सुनो और यहां से निकलो। उस जमाने में बैंक की नौकरी मिलना, इंडियन सिविल सर्विस-पीसीएस से कम बड़ी बात नहीं होती थी। मैंने बैंक की नौकरी छोड़ दी। मेरा पूरा परिवार मेरे ऊपर निर्भर था। मेरे पिताजी मुंबई में स्ट्रगल कर रहे थे। दादाजी की नौकरी छूट गई थी। ऐसे में जब मेरी नौकरी लगी तो सबको लगा कि उन्हें एक सहारा मिल गया है। मैंने जब अपना फैसला घरवालों को सुनाया, तो सब रोने लगे। मुझे कहा गया कि ऐसा मत करो। तुम देख रहे हो कि हम लोग ऐसे ही तकलीफ में हैं। पिता पहले से ही मुंबई में संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे में तुम भी हमें छोड़कर चले जाओगे तो हमारा क्या होगा? लेकिन मेरी जिद थी और दिल मानने को तैयार नहीं था और मैं निकल गया।मैं 6 अप्रैल 1980 को मुंबई आया था। वो तारीख मुझे आज भी याद है। जब मैं यहां आया तो भौचक्का रह गया कि ये मैं कहां आ गया। मैं मालवाणी के चॉल नंबर 628 और ब्लॉक चार में

भाग्यशाली थे कि सही मायनों में गांव कहते किसको हैं, वो हमने जिया था। तालाब, पोखर, बगीचा, आती-पाती क्या होता है, आने वाली पीढ़ी को इन लफ्जों का मतलब भी पता नहीं होगा।खैर, पिताजी की तमन्ना नहीं थी कि मैं कभी गीतकार बनूं। वो कहते थे कुछ भी करना, गीतकार बनने की कोशिश मत करना। इस वजह से उन्होंने मुझे लिटरेचर नहीं पढ़ने दिया और मुझे बीएचयू से एमकॉम कराया। वो मेरे गाने लिखने के बिल्कुल खिलाफ थे। हालांकि मेरे लिखने का शौक अपने चरम पर था। मैं सातवीं क्लास में था, जब मुझे लिखने का शौक जगा। उसी उम्र से मैंने नोट बनाने शुरू कर दिए थे। फिर दोस्तों का एक ग्रुप बन गया, जो शायरी करते थे। फिर हम दोस्तों ने एक छोटा सा रूम लेकर उसमें गोष्ठी शुरू की। यहां से बात ऑर्केस्ट्रा पार्टी तक पहुंची। फिर हमने एक ऑर्केस्ट्रा पार्टी शुरू कर दी, जिसका नाम मनोरंजन ऑर्केस्ट्रा पार्टी था। इसकी एंकरिंग मैं करता था और शेरो-शायरी सुनता-सुनाता था।उन दिनों बनारस में गुप्ता संगीतालय के नाम से एक मशहूर संगीतालय था। वहां, जाकर मैंने बैंजो बजाना सीख लिया। ऐसे में रहने लगा। 'चॉल में रहने के दौरान के संघर्षों को मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। एक बार तो ऐसा हुआ कि मैं शौंच के लिए गया था, तभी एक शराबी दरवाजा तोड़ अंदर घुस आया। उसने मुझे गंदी-गंदी गालियां दीं। मैं एक संभ्रात परिवार से आता था, मैं ऐसी सिचुएशन सोच भी नहीं सकता था। उस वक्त मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। उस घटना को आज भी याद करके मेरी रूह कांप जाती है।'मैं 23 साल की उम्र में मुंबई आ गया था। उस उम्र तक मैं अपने पिता से सिर्फ दो बार मिला था। वो मुंबई में थे, लेकिन मैं उन्हें बिना बताए आया और अकेले चॉल में रह रहा था। 23 साल की उम्र तक मैं बस दो बार अपने पिता से मिला था। मेरा पालन-पोषण दादाजी ने ही किया था। पिताजी मुंबई में जमने के लिए 17 साल तक संघर्ष करते रहे। जब पिताजी को पता चला कि मैं भी मुंबई में हूं तो उन्होंने मुझे मिलने बुलाया। ये तीसरी बार था, जब मैं उनसे मिलने वाला था। मैं पिताजी से मिलने किसी उम्मीद में नहीं गया था कि वो मुझे अपने साथ रख लें। मैं गुस्से में था कि आज वो जो भी पूछेंगे, मैं उसका उल्टा जवाब दूंगा। पहले तो मुझे लगा ही नहीं कि वो मेरे पिता हैं। मुझे लगा कि मैं किसी रिश्तेदार से मिलने वाला हूं।

जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने कहा कि तुम बड़े हो गए हो और अपने जीवन का फैसला करने का तुम्हें अधिकार है, लेकिन पिता होने के नाते मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं। फिर उन्होंने मुझसे पहला सवाल किया कि क्या तुमने कभी किसी लड़की से मोहब्बत की? उनका सवाल सुनकर मैं हैरान रह गया। मैंने हां में जवाब दिया। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि क्या सोचकर प्यार किया? मैंने उनसे कहा कि प्यार कोई सोचकर नहीं करता है। जब करना होता है तो कर लेता है। उन्होंने कहा- अब पूछो, यह सवाल मैंने तुमसे क्यों किया? मैंने कहा- बताइए। तब उन्होंने कहा कि मैं जानना चाहता हूं कि तुम बावफा आशिक हो या बेवफा आशिक हो। क्योंकि यह इंडस्ट्री महबूबा की तरह है। अगर इससे सच्ची मोहब्बत हो तभी रहना, वरना भाग जाना।उन्होंने दूसरा सवाल पूछा कि तुम यहां क्या सोचकर आए हो। इंडस्ट्री जन्नत की तरह है। यहां सब हूरें मिलेंगी, पैसा मिलेगा, शोहरत मिलेगी। मैंने कहा- हां फिर, उन्होंने कहा- जन्नत में कुछ पाने के लिए आदमी को मरना पड़ता है। क्या तुम मरने के लिए तैयार हो? मुझे लगा पापा ने बात तो बहुत बड़ी कर दी, लेकिन मैं उन्हें दो टूक जवाब देने के मूड से आया था। मैंने इस सवाल पर भी फट से हां कह दिया। फिर पापा ने मुझसे कहा कि चलो अपना बोरिया-बिस्तर उठाओ और घर चलो, लेकिन अगले छह महीने तुम कुछ भी नहीं लिखोगे। अब मैं बताऊंगा कि इस इंडस्ट्री की रवायत और भाषा क्या है।मैं तुम्हें हर म्यूजिक डायरेक्टर के साथ होने वाली मीटिंग में ले जाऊंगा, लेकिन मैं कहीं तुम्हारा परिचय नहीं कराऊंगा। तुम वहां बैठना और चीजों को समझने की कोशिश करना। गाना लिखने के लिए जो सिचुएशन मुझे दी जाएगी, उस पर मैं भी लिखूंगा और तुम भी लिखोगे। मैं हम दोनों का लिखा मुखड़ा आगे सुनाऊंगा, जिस दिन तुम्हारा लिखा पास हो जाएगा, मैं तुम्हें आजाद छोड़ दूंगा। उसके बाद तुम जा सकते हो।एक साल बाद मेरा एक गाना आया। फिल्म का नाम 'बिंदिया चमकेगी' था और उसमें रेखा जी थीं। यहां से मेरे जीवन में संघर्ष की शुरुआत हुई। मैं सुबह निकलता और रात में थका-हारा घर पहुंचता था। पिताजी मेरा संघर्ष देख रहे थे। मुझसे पूछते थे कि कहां-कहां गए, क्या लिखा। मेरा संघर्ष देखकर उन्होंने जीवन में एक बार ही मेरे लिए लक्ष्मीकांत जी बात की। तब उन्होंने पिताजी से कहा कि आज तो आपने कह दिया, दोबारा किसी से ये बात मत कहिएगा। एक बात याद रखिएगा कि बाप की दुकान बाप की होती है। आपने कहा है तो मैं बस इतना कर सकता हूं कि मैं इसे सुनूंगा। ये जब अपना मुखड़ा लिखेगा, उस दिन मैं आपको कॉल करूंगा कि आइए, अब आपके बेटे का गाना रिकॉर्ड कर रहा हूं। मुझे लक्ष्मीकांत जी से एक गाना पास कराने में चार साल लग गए। मैं हर दूसरे दिन उनके पास जाता और अपना लिखा सुनाता। वो मुझे हर बार कहते कि अभी वो बात नहीं है। चार साल बाद एक दिन ऐसा आया कि मैंने उन्हें अपना लिखा सुनाया और वो उन्हें पसंद आ गया। फिर उन्होंने वो गाना बनाया और पिताजी को कॉल कर कहा कि आइए आपके बेटे का गाना रिकॉर्ड करने वाला हूं। वो गाना गोविंदा की फिल्म 'लव 86' का था। इस तरह लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के यहां मेरी एंट्री हुई।एक म्यूजिक डायरेक्टर थे, जो मेरे पिताजी के एक अच्छे-खासे दोस्त थे। मैं उनके पास जब ऐसे जाता था तो बहुत इज्जत से मिलते थे। चाय पिलाते और हालचाल लेते। उस दिन उन्होंने सामने से बोला कि मैंने सुना है कि तुम कुछ लिखते हो। कभी सुनाया नहीं तो कुछ सुनाओ। मैंने उन्हें एक घंटे तक अपनी कविता सुनाई और वो गौर से सुनते रहे। अचानक वो इतना खफा हुए कि मेरी डायरी तीसरी मंजिल से नीचे फेंक दी। फिर बहुत गुस्से में आकर बोले कि क्यों अपने पिताजी का नाम खराब कर रहे हो? इतने बड़े पिता का नाम तुम्हारी वजह से खराब हो जाएगा। मैं एक काम करता हूं, मैं तुम्हें टिकट के पैसे देता हूं। तुम अपने पिता को बताना भी मत और इस शहर से चले जाओ।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर 'घूसखोर पंडत' नाम हटाया,नया टाइटल अभी तय नहीं

मुंबई। मनोज बाजपेयी की फिल्म घूसखोर पंडत का नाम बदल दिया गया है। फिल्ममेकर नीरज पांडेय ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में एफिडेविट दाखिल करके इसकी

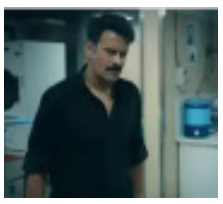

जानकारी दी। जिसमें बताया गया कि फिल्म का विवादित टाइटल हटा दिया गया है। अब इसका कहीं इस्तेमाल नहीं होगा। नया नाम अभी तय नहीं हुआ है, लेकिन जो भी रखा जाएगा, वह पुराने नाम जैसा या उससे मिलता-जुलता नहीं होगा। नीरज पांडेय ने कोर्ट में बताया कि नया नाम फिल्म की कहानी और उद्देश्य को सही ढंग से दिखाएगा और कोई गलत मतलब नहीं निकलेगा। इसके अलावा पुराने नाम से जुड़े सभी पोस्टर, ट्रेलर और प्रचार सामग्री भी पहले ही हटा दी गई है। दरअसल 12 फरवरी को पिछली सुनवाई के दौरान कोर्ट ने फिल्ममेकर और ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स को फिल्म का नाम बदलने का आदेश दिया था। याचिकाकर्ता अतुल मिश्रा ने फिल्म की रिलीज पर रोक लगाने की मांग की है। नेटफ्लिक्स ने 3 फरवरी 2026 को मनोज बाजपेयी की 'घूसखोर पंडत' का ऐलान भी टीजर रिलीज करके किया गया था। लेकिन जैसे ही इसका टीजर जारी किया गया तो इसके टाइटल को लेकर विवाद शुरू हो गया है। लोग सड़कों पर उतर गए। इसके बाद यह मामला कोर्ट तक पहुंच गया। टीजर में मनोज बाजपेयी सीनियर इंस्पेक्टर अजय दीक्षित के किरदार में नजर आ रहे हैं, जिन्हें दिल्ली में 'पंडित' के नाम से जाना जाता है। फिल्म में उन्हें एक बदनाम पुलिस अधिकारी के रूप में दिखाया गया है। टीजर के मुताबिक, दीक्षित 20 साल पहले एसआई के रूप में भर्ती हुए थे और अपने किए गए कारनामों की वजह से उन्हें बार-बार डिमोट किया गया। अलग-अलगह जगहों पर ब्राह्मण समाज ने नेटफ्लिक्स की 'घूसखोर पंडत' के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। इसके अलावा मुंबई के वकील आशुतोष दुबे का आरोप है कि 'पंडत' जैसे सम्मानजनक शब्द को भ्रष्टाचार के साथ जोड़ना न केवल गैर-जिम्मेदाराना है, बल्कि इससे पूरे समुदाय की गरिमा को ठेस पहुंचती है।

जो दिखेगा वही बिकेगा, तो दूसरे कलाकारों का क्या?जब मैं बड़ा हो रहा था, रेडियो सीलोन पर बिनाका

गीतमाला में अमीन सयानी गाना सुनाने से पहले गाना बनाने वालों का नाम बताते थे- गीतकार, संगीतकार और गायक। बरसों तक ये परंपरा रही। धीरे-धीरे साहिर, शृंगार का प्रेम हो सकता है, विद्रोह का हो सकता है, असहमति का हो सकता है। प्रेम को समीकरण नहीं सिखाए जा सकते। अब सामर्थ्य धन के पास है और धन आता है

अनजान, आनंद बख्शी, नक्श लायलपुरी से बात बढ़ते-बढ़ते यहां तक पहुंची कि 'चुपके चुपके रात दिन आंसू बहाना याद है' गुलाम अली की गजल बन गई, हसरत मोहानी का जिक्र ही नहीं हुआ।जबकि हसरत मोहानी उस गजल से कहीं बड़े आदमी थे। 1921 में 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा उन्होंने ही दिया था। अब गाना अरिजीत सिंह का होता है या सोनू निगम का, गीतकार-संगीतकार का नाम बार-बार लेने में रेडियो-टीवी समय बर्बाद नहीं करते।जबकि प्रोग्राम अब ज्यादा समय के हो गए हैं। अमीन सयानी तो हफ्ते में एक बार ही आते थे। ऐसा नहीं है कि गुलाम अली या सोनू निगम का योगदान कम है, लेकिन दर्शक नेपथ्य के कलाकारों को जगह देगा, तो उनकी सामर्थ्य बढ़ेगी। ये थंबनेल का समय है। यूट्यूब या जहां कहीं भी दर्शक एक तस्वीर देख के वीडियो पर क्लिक करता है, एक व्यू बढ़ जाता है। कितने व्यू बने- इससे आमदनी तय होती है। थंबनेल की तस्वीर से तय होता है कि दर्शक ने क्यों क्लिक किया। यहीं से समस्या की शुरुआत होती है। जो दिखेगा, वो बिकेगा- तो अमिताभ भट्टाचार्य का क्या? इरशाद कामिल का क्या? उन तमाम नेपथ्य के कलाकारों का क्या? कुछ कलाएं ऐसी होती हैं, जिनके लिए पूरी टीम काम करती हैं। उसका श्रेय सिर्फ एक का नहीं होता। और जब दर्शक सिर्फ एक को श्रेय देना शुरू कर दे, तो सामर्थ्य का असंतुलन शुरू होता है। जब पहली बार न्यूज एंकरों की होर्डिंग लगी थी देश में, वहीं से टीवी पत्रकारिता का पतन शुरू हो गया था। कथावाचक, कथा से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया। अब मोहभंग का दौर है- वाचकों से, नायकों से। अब शिकायत कथा से है। पर कथा की अकेले की सामर्थ्य कम हो चली है। उसे तो हमने ही पीछे छोड़ा ना? जमीन का जो पत्रकार था, जो सच लेकर आता था, वो या तो खत्म हो गया या वो भी वाचक बन गया। आज स्थिति ये है कि समाचार में संगीत बज रहा है। सोचिएगा, बहुत त्रासदी का विषय है। शिकायत करते हैं कि दर्शक की देर तक जुड़ने की क्षमता कम हो गई है। अटेंशन स्पान घट गया है। ये झूठ है। फिल्मों में निर्देशक तकलीफ में है। उसकी कुर्सी उसके नीचे से खींच ली गई है। वह बमुश्किल कहानी को बचाकर आप तक लाने का प्रयास कर रहा है। अकसर हार रहा है, कभी-कभी जीत भी जाता है। उसे दर्शक का हाथ चाहिए। फिल्में बनती कैसे हैं? एक व्यक्ति को कहानी कहनी होती है। उसके साथ कलाकार जुड़ते हैं, धन जुड़ता है और फिल्म बनती है। पर सिनेमा ऐसी कला है, जिसमें कई विधाओं की जरूरत होती है- और ढेर सारे धन की भी। करोड़ों रुपए। इतने पैसों में बड़े-बड़े उद्योग शुरू हो जाते हैं, जो सालों तक रोजगार और मुनाफा देते हैं। फिल्म को उद्योग मानें, तो उसकी उम्र दो-तीन साल की ही होती है। लेकिन फिल्म एक कला भी है, और कला कलाकार को बेचैन कर देती है। वो रास्ते निकाल लेता है। दिल से लिखी गई कहानी को समीकरण समझ में नहीं आते। कला प्रेम से उपजती है। वो थंबनेल से। थंबनेल पर क्लिक कौन करता है? दर्शक। सबसे ताकतवर शख्स। कलाकार वो करना चाहता है, जो पहले नहीं किया गया। धन वही करना चाहता है, जो पहले सफल रहा है। यही भयंकर मतभेद है। तो अब थंबनेल पर जिसकी तस्वीर है, वही सबसे महत्वपूर्ण बन गया है। कहानी अकेली पड़ गई है। फिर भी निर्देशक को उम्मीद रहती है कि वो अपनी कहानी कह पाएगा। कभी-कभी वो कह भी लेता है। अच्छी फिल्में बन भी जाती हैं। लेकिन ज्यादातर मौकों पर निर्देशक हार जाता है। कभी आत्मसमर्पण कर देता है, कभी उसे पता भी नहीं चलता कि वो कब बह गया। पिछली दस फिल्में याद कीजिए, जो अच्छी लगी थीं। उनके निर्देशक-लेखक को खोजिए कि क्या बना रहे हैं अगली बार? हो सकता है आप थंबनेल की भूल-भुलैया में भटक गए हों। असल कहानियां आपको खोज रही हैं, आप उन्हें। दर्शक ताकतवर है। उसे थंबनेल के चक्रवात से बाहर निकलना होगा। लेखक और निर्देशक की सामर्थ्य बढ़ानी होगी। इसमें समय लगेगा... बस शुरू अभी करना होगा। जो कहानियां परदे तक पहुंच रही हैं, उनसे कहीं अच्छी कहानियां धक्के खा रही हैं। ताकत थंबनेल के पास है, लेकिन उससे कहीं ज्यादा ताकत दर्शक के पास है कि वो किसे क्लिक करे। निर्देशक और कहानियों को आज दर्शक की ताकत चाहिए। (ये लेखक के अपने विचार हैं अनुभव सिन्हा)

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज से प्रकाशित।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।